بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا الۡقُرۡاٰنَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّكِرٍ ۔ (सूरह कमर:१७)

तर्जमा : और हम ने कुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया है,
तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है ?

क़ुर्आन का पैग़ाम

मुन्तखब आयात

हिन्दी

दूसरा एडिशन
रमज़ानुल मुबारक १४४० | मई २०१९

DEENIYAT

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेश लफ़्ज़

कुर्आने करीम अल्लाह तआला की वो किताब है जिस की बदौलत ज़लील व रुस्वा इन्सानों को इज़्ज़त मिली, इस में गौर व फ़िक्र करने वालों को हिदायत मिली, इस की तिलावत करने वालों को चेन व सुकून मिला, इस पर अमल करने वालों को कामयाबी का परवाना मिला । ये इन्सानों को अंधेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाने वाली, भटके हूओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली और बिछड़े हूओं को अल्लाह से मिलाने वाली किताब है । इस के फ़ज़ाइल और फ़वाइद बेशुमार हैं । इस जैसा कलाम आज तक न कोई ला सका है और न क़ियामत तक ला सकेगा ।

हूज़ूरे अकरम ﷺ का इरशाद है के क़ुर्आने करीम ऐसा सिफ़ारिशी है जिस की सिफ़ारिश क़ुबूल की जाए, बंदों की बख्शिश के लिये ऐसी कोशिश करने वाला है के जिस की कोशिश क़ुबूल की जाए । जो इस को अपना इमाम और रेहबर बनाएगा, उस को ये जन्नत में ले जाएगा और इस पर अमल न करने वाले को जहन्नम की तरफ़ ले जाएगा ।

(शोअबुल ईमान : २०१०, जाबिर رضی اللہ عنہ)

क़ुर्आन की तिलावत को लाज़िम पकड़ो, वो तुम्हारे लिये ज़मीन पर हिदायत का नूर है और आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा है ।

(मोअजमे सग़ीर : ९४९, अबू सईद رضی اللہ عنہ)

चूँके क़ुर्आने करीम अरबी ज़बान में है, इस लिये उम्मत का बड़ा तब्क़ा उस की तालीमात से दूर और बे-ख़बर है । इसी वजह से हमारे अस्लाफ़ ने उम्मत के इस तबक़े को क़ुर्आनी हिदायात और रब्बानी तालीमात से वाक़िफ़ कराने की ग़रज़ से मुख़्तलिफ़ ज़बानों में क़ुर्आने करीम का तर्जमा शायेअ किया । इस की मुख़्तसर और बड़ी बड़ी तफ़सीरें लिखीं और इस के उलूम व मआरिफ़ को लोगों तक पहूंचाने की कोशिशें फ़रमाईं, उस के बावजूद शिद्दत से इस बात का तक़ाज़ा था के इंतिहाई मुख़्तसर वक़्त में क़ुर्आने करीम के पैग़ाम और इस की तालीमात का एक ऐसा हसीन गुलदस्ता तय्यार किया जाए, जिस के ज़रीये क़ुर्आने करीम के मुतालबे और तक़ाज़ों का अच्छी तरह इल्म हो जाए और उन के अंदर अमल करने का एहसास और जज़्बा पैदा हो जाए । चुनांचे इदार-ए-दीनियात अल्लाह की तौफ़ीक़ से क़ुर्आन का पैग़ाम नामी किताब उम्मेत मुहम्मदिया के सामने मुख़्तलिफ़ ज़बानों में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है।

इस किताब में मुख़्तलिफ़ अख्लाक़ी व इस्लाही उन्वानात के तहत मुन्तख़ब क़ुर्आनी आयतें और उन का तर्जमा बैनल कौसेन में वज़ाहत के साथ दिया गया है और कहीं कहीं तर्जमे के बजाए क़ुर्आनी आयात का ख़ुलासा और मफ़हूम पेश किया गया है । इस किताब से फ़ाइदा उठाने वाले हज़रात से गुज़ारिश है के

- वो क़ुर्आन के इस पैग़ाम को समझ कर अमल करने और किसी मोअ्तबर आलिमे दीन की रेहनुमाई में मुकम्मल क़ुर्आने करीम को पढ़ने की कोशिश करें ।
- इस मुख़्तसर किताब में क़ुर्आने करीम के हर पारे को लेकर उस के चंद मज़ामीन पर रोशनी डाली गई।
- एक सफ़े पर एक ही पारे के मज़ामीन दर्ज किये गए हैं ।
- इस किताब को बग़ैर वुज़ू व तहारत के हाथ न लगाऐं ।
- तरावीह व वित्र के बाद एक पारे की तर्तीब के एतिबार से या मज़ामीन पढ़ कर सुनाए जा सकते हैं । इंशा अल्लाह आप १० मिनट के अंदर क़ुर्आने करीम के इस अहम पैग़ाम को सुनने की सआदत हासिल कर लेंगे ।
- अइम्म-ए-किराम से गुज़ारिश है के तरावीह के बाद वक़्त कम और मुख़्तसर होने की वजह से क़ुर्आने करीम की आयात की तिलावत न करें, बल्के उस का तर्जमा और मफ़हूम पढ़ कर सुना दें ।
- क़ुर्आन के पैग़ाम को आम करने के जज़्बे के पेशे नज़र मसाजिद में, स्कूल की असैंबली में और घरों में इज्तिमाई तौर पर पढ़ने का मामूल बनाएं ।

अख़ीर में दुआ है के अल्लाह तआला इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमा कर अवाम व ख़वास के लिये नफ़ा बख्श और हमारे लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए । आमीन या रब्बुल आलमीन

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

● **एक अल्लाह ही की इबादत करो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २१, २२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए लोगो! अपने उस परवरदिगार की इबादत करो, जिस ने तुम्हें और उन लोगों को भी पैदा किया, जो तुम से पेहले गुज़रे हैं ताके तुम अल्लाह से डरने वाले बन जाओ। (वो परवरदिगार ऐसा है) जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया और आस्मान को छत बनाया और आस्मान से पानी बरसाया, फिर उस के ज़रीये तुम्हारे रिज़्क़ के तौर पर फल निकाले, लिहाज़ा अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठेहराओ, जब के तुम (ये सब बातें) जानते हो ।

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

● **कुर्आने करीम अल्लाह की सच्ची किताब है :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २३, २४ में ये बात बताई गई है के कुर्आने करीम अल्लाह ही का कलाम है : अहले अरब कुर्आने करीम को अल्लाह की सच्ची किताब मानने के बजाए मुहम्मद ﷺ का बनाया हुआ कलाम केहते थे । अल्लाह तआला ने उन को साफ़ और वाज़ेह अल्फ़ाज़ में फ़रमाया : अगर तुम को कुर्आन के अल्लाह का कलाम होने के बारे में शक है, तो कुर्आन जैसी एक छोटी सी सूरत ही बना कर ले आओ और अल्लाह के अलावा जिस की मदद हासिल करना चाहो कर लो, मगर वो अपनी फ़साहत, बलाग़त और ज़बान दानी पर नाज़ करने के बावजूद आज तक इस बात का कोई जवाब नहीं दे सके और न आइन्दा दे सकेंगे । ये इस बात की अलामत है के कुर्आने करीम अल्लाह का कलाम है ।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

● **नेक अमल करने वाले मोमिन बंदों के लिये जन्नत में नेअ्मतें :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २५ में अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है: जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक अमल किये हैं, उन को ख़ुशख़बरी दे दो के उनके लिये (जन्नत में) ऐसे बाग़ात (तय्यार किये गए) हैं, जिनके नीचे नहरें बेहती होंगी, जब कभी उनको उन (बाग़ात) में से कोई फल रिज़्क़ के तौर पर दिया जाएगा, तो वो कहेंगे : ये वही है जो हमें पेहले भी (दुन्या में) दिया गया था और उन्हें वो रिज़्क़ ऐसा ही दिया जाएगा जो देखने में (दुन्या के फल जैसा) मिलता जुलता होगा, (लेकिन इस का मज़ा दुन्या के फल से बिलकुल अलग होगा) और उन के लिये वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और वो इन (जन्नत के बाग़ों) में हमेशा हमेशा रहेंगे ।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

● **हक बात को मत छुपाओ :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ४१ ता ४३ में अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान है : मेरी आयतों को मामूली सी क़ीमत लेकर न बेचो और (किसी और के बजाए) सिर्फ मेरा ख़ौफ़ दिल में रखो और हक़ को बातिल के साथ मत मिलाओ और न हक़ बात को छुपाओ जब के (असल हक़ीक़त) तुम अच्छी तरह जानते हो और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो ।

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ

● **नेक काम की दावत देते हुए खुद भी अमल करो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ४४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : क्या तुम (दूसरे) लोगों को तो नेकी का हुक्म देते हो और ख़ुद अपने आपको भूल जाते हो?

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۚ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾

● **किसी नेअ्मत के न मिलने पर सब्र करो और नमाज़ पढो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ४५, ४६ में अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फ़रमाते हैं : सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, नमाज़ भारी ज़रूर मालूम होती है, मगर उन लोगों को नहीं जो ख़ुशूअ् (यानी ध्यान और आजिज़ी) से पढ़ते हैं, (और) जो इस बात का खयाल रखते हैं के वो (क़ियामत के दिन) अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं और उनको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है ।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

● **कियामत के दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आएगा** : सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ४८ में अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है : उस (क़ियामत के) दिन से डरो, जिस दिन कोई शख़्स भी किसी के कुछ काम नहीं आएगा, न किसी से कोई सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी, न किसी से किसी किस्म का मुआवज़ा लिया जाएगा और न उनको कोई मदद पहुंचेगी (बल्के उस दिन हर आदमी का अपना अमल काम आएगा)।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۚ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

● **गुनाह करने से बचो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ७४ में ये ख़बर दी गई है के गुनाहों से दिल सख़्त हो जाता है : अल्लाह तआला ने इन्सान के दिल में हक़ व सच बात के कुबूल करने की सलाहियत अता फ़रमाई है । लेकिन इन्सान अल्लाह की नाफ़रमानी और गुनाह कर के इतना आगे बढ़ जाता है के उस का दिल पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो जाता है । फिर न तो वो हक़ बात को कुबूल करता है और न अल्लाह के ख़ौफ़ से डरता है । गुनाहों की कसरत से दिल में सख़्ती पैदा हो जाती है । इस लिये हमें तमाम गुनाहों से मुकम्मल परहेज़ करना चाहिये ।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾

● **नमाज़ की पाबंदी करो और ज़कात वक्त पर अदा कर दो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : ११० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और (याद रखो के) जो भलाई का अमल भी तुम ख़ुद अपने फ़ाइदे के लिये आगे भेज दोगे उस (के बेहतरीन बदले) को अल्लाह के पास पाओगे, बेशक जो अमल भी तुम (दुन्या में) करते हों अल्लाह उसे (यक़ीनन) देख रहा है ।

فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ

● **नेक कामों में दूसरों से बढने की कोशिश करो सूर–ए–बकरा आयत नंबर :** १४८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम नेक कामों में एक दूसरे से आगे बढने की कोशिश करो ।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾

● **हर वक्त अल्लाह को याद करो और उस का शुक्र अदा करो** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १५२ में अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फ़रमाते हैं : (तुम दुन्या में जहां कहीं भी रहो) मुझे याद करो, मैं तुम्हें (दुन्या और आख़िरत में) याद रखूँगा, (यानी तुम को बेहतरीन बदला दूँगा) और (मेरी दी हूई नेअ्मतों पर) मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾

● **अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ हैं** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १५३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

● **मुसीबत आने पर ये सोचें के हमारे पास जो कुछ है, सब अल्लाह ही का दिया हुवा है:** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १५५ ता १५७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : देखो हम तुम्हें ज़रूर आज़माऐंगे, (कभी) ख़ौफ़ से और (कभी) भूक से और (कभी) माल व जान और फलों में कमी कर के और जो लोग (ऐसे हालात में) सब्र से काम लें, उन को ख़ुशख़बरी सुना दो, ये वो लोग हैं के जब उनको कोई मुसीबत पहूंचती है तो ये केहते हैं के हम सब अल्लाह ही के (पैदा किये हूए) हैं और हम को (मरने के बाद) अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है, ये वो लोग हैं जिन पर उन के परवरदिगार की तरफ़ से ख़ुसूसी इनायतें हैं और रहमत है और यही लोग हैं जो हिदायत पर हैं ।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

● **शैतान की पैरवी मत करो :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १६८, १६९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए लोगो! ज़मीन में जो हलाल (और) पाकीज़ा चीज़ें हैं, वो खाओ और शैतान के पीछे न चलो; यक़ीन जानो के वो (शैतान) तुम्हारे लिये एक खुला दुश्मन है, वो तो तुम को (गुमराह करने के लिये) यही हुक्म देगा के तुम बुराई और बेहयाई के काम करो और अल्लाह के ज़िम्मे वो बातें लगाओ जिनका तुम्हें इल्म नहीं है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾

● **हलाल और पाक रिज़्क हासिल कर के खाओ :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १७२, १७३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम्हें रिज़्क़ के तौर पर अता की हैं, उन में से (जो चाहो) खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो, अगर वाक़ई तुम सिर्फ उसी की बंदगी करते हो, उस ने तो तुम्हारे लिये बस मुरदार जानवर, ख़ून और सुव्वर हराम किया है, नीज़ वो जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, (यानी अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़बह किया गया हो, वो भी हराम हो जाता है) हां! अगर कोई शख़्स इंतिहाई मजबूरी की हालत में हो (और उस के पास खाने पीने के लिये कोई और चीज़ न हो और इन हराम कर्दा चीज़ों में से कुछ खाले) जब के इस का मक़्सद न लज़्ज़त हासिल करना हो और न वो (ज़रूरत की) हद से आगे बढ़े, (यानी इतना ही खाए, जिस से जान बच जाए) तो इस पर कोई गुनाह नहीं है, यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा महेरबान है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾

● **रोज़ा रखना फ़र्ज़ है :**सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १८३ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! तुम पर (रमज़ान के) रोज़े फ़र्ज़ कर दिये गए हैं, जिस तरह तुम से पेहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताके तुम्हारे अंदर तक़्वा पैदा हो ।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۚ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

● **बीमार और मुसाफिर शख़्स रमज़ान के बाद रोज़ों की क़ज़ा रख सकता है :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १८५ में अल्लाह तआला का इरशाद है : रमज़ान का महीना वो हैं, जिस में क़ुर्आन नाज़िल किया गया जो सरापा हिदायत और ऐसी रोशन निशानियों का हामिल है जो सही रास्ता दिखाती और हक़ व बातिल के दरमियान दो टोक फ़ैसला कर देती हैं, लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स भी ये महीना पाए, वो इस में ज़रूर रोज़ा रखे और अगर तुम में से कोई शख़्स बीमार हो या सफ़र पर हो (और कुछ रोज़े छूट गए हों) तो वो दूसरे दिनों में उतनी ही तादाद (में रोज़ों की क़ज़ा) पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का मुआमला करना चाहता है और तुम्हारे लिये मुश्किल पैदा करना नहीं चाहता ताके (तुम रोज़ों की) गिनती पूरी करलो और अल्लाह ने तुम्हें जो राह दिखाई, इस पर अल्लाह की तकबीर कहो और ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो ।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

● **दुआ करने वाले की दुआ अल्लाह तआला ज़रूर सुनते हैं :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १८६ में अल्लाह का फ़रमान है : (ए पैग़म्बर!) जब मेरे बंदे आप से मेरे बारे में पूछें तो (आप उन से कह दीजिये के) मैं इतना क़रीब हूँ के जब (भी) कोई मुझे पुकारता है, तो मैं पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ, लिहाज़ा वो भी मेरी बात दिल से क़ुबूल करें और मुझ पर ईमान भी लाएं ताके वो सीधे रास्ते पर आजाऐं ।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

● **गलत तरीके से दूसरों का माल न खाओ :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : १८८ में अल्लाह तआला ये नसीहत करते हैं : आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ तरीक़ों से न खाओ ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ

● **अपना माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करो, आखिरत में खूब सवाब मिलेगा :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २५४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! जो रिज़्क़ हम ने तुम्हें दिया है, इस में से (क़ियामत का) ऐसा दिन आने से पेहले पेहले (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करलो, जिस दिन न कोई सौदा होगा, न कोई दोस्ती (काम आएगी) और न कोई सिफ़ारिश हो सकेगी ।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۭ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

● **माल ख़र्च करने के बाद एहसान न जताओ :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २६१, २६२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपने माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना सात बालें उगाए (और) हर बाल में सौ दाने हों (इसी तरह अल्लाह तआला एक नेकी का सवाब सात सौ नेकियों तक बढ़ाता है) और अल्लाह जिस के लिये चाहता है (बंदे के इख्लास की वजह से सवाब मैं सात सौ से भी ज़्यादा) कई गुना इज़ाफ़ा कर देता है, अल्लाह बहुत वुस्अत वाला (और) बड़े इल्म वाला है, (और) जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करने के बाद न एहसान जतलाते हैं और न कोई तकलीफ़ पहुंचाते हैं, वो अपने परवरदिगार के पास अपना सवाब पाएँगे; न उनको कोई ख़ौफ़ पहुंचेगा और न कोई ग़म ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۡ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝

● **नेक कामों में घटिया माल देने से बचना चाहिये :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २६७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! जो कुछ तुमने कमाया हो और जो पैदावार हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाली हो, उस की अच्छी चीज़ों का एक हिस्सा (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च किया करो और ये निय्यत न रखो के बस ऐसी ख़राब किस्म की चीज़ें (अल्लाह के नाम पर) दिया करोगे जो (अगर कोई दूसरा तुम्हें दे तो नफ़रत के मारे) तुम उसे आँखें बंद किये बग़ैर न ले सको और याद रखो के अल्लाह ऐसा बेनियाज़ है के हर किस्म की तारीफ़ उसी की तरफ़ लोटती है ।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

● **कस्रत से ख़र्च करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन बदला देगा :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २७४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो लोग अपने माल दिन रात ख़ामोशी से भी और खुल्लम खुल्ला भी ख़र्च करते हैं, वो अपने परवरदिगार के पास (क़ियामत के दिन) अपना सवाब पाएंगे और न (उस दिन) उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा और न कोई गम पहुंचेगा ।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ۭ

● **सूद खाने वाले का अंजाम :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २७५ मैं अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो लोग सूद खाते हैं वो (क़ियामत में) उठेंगे, तो उस शख़्स की तरह उठेंगे जिसे शैतान ने छू कर पागल बना दिया हो, ये इस लिये होगा के इन्होंने कहा था के बैअ (ख़रीदना और बेचना) भी सूद ही की तरह है, हालांके अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम क़रार दिया है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠

● **उधार का मुआमला करते वक्त उसे लिख लेना चाहिये :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २८२ में अल्लाह तआला ये नसीहत फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! जब तुम किसी तै किये हुए वक़्त के लिये उधार का कोई मुआमला करो, तो उसे लिख लिया करो और तुम में से जो शख़्स लिखना जानता हो, इन्साफ़ के साथ तहरीर लिखे।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَي الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۪ وَاغْفِرْ لَنَا ۪ وَارْحَمْنَا ۪ اَنْتَ مَوْلٰىنَا

● **अल्लाह तआला से मांगने की बेहतरीन दुआ :** सूर–ए–बकरा आयत नंबर : २८६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : (मुसलमानो! अल्लाह से ये दुआ किया करो के) ए हमारे परवरदिगार! अगर हम से कोई भूल चूक हो जाए, तो हमारी पकड़ न फ़रमाइये और ए हमारे परवरदिगार! हम पर इस तरह का बोझ न डालिये जैसा आपने हम से पेहले लोगों पर डाला था और ए हमारे परवरदिगार! हम पर ऐसा बोझ न डालिये जिसे उठाने की हम में ताक़त न हो और हमारी ग़लतियों से दर–गुज़र फ़रमाइये, हमें बख्श दीजिये और हम पर रहम फ़रमाइये, आप ही हमारी हिमायत करने वाले और मददगार हैं ।

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

● **अल्लाह तआला के यहां दीने इस्लाम ही मकबूल है :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : बेशक (मोअ्तबर) दीन तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है और जिन लोगों को (क़ुर्आन से पेहले जो) किताब दी गई थी, उन्होंने अलग रास्ता न जानने की वजह से नहीं बल्के इल्म आ जाने के बाद (जान–बूझ कर) महज़ आपस की ज़िद की वजह से इख्तियार किया और जो शख़्स भी अल्लाह की आयतों (यानी उस के अहकाम) को झुटलाए, तो (उसे याद रखना चाहिये के) अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है ।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰۗىِٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

● **मुआहदे को पूरा करने पर खुश–खबरी और तोडने पर वईद :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : ७६, ७७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : क्यों नहीं! जो अपने अहद को पूरा करेगा (यानी अल्लाह और उस के रसूल और आख़िरत वग़ैरा पर ईमान लाएगा) और गुनाह से बचेगा, तो अल्लाह ऐसे परहेज़गारों से मुहब्बत करता है, (इस के बर ख़िलाफ़) जो लोग अल्लाह से किये हुए अहद और अपनी खाई हुई कस्मों का सौदा कर के थोड़ी सी क़ीमत हासिल कर लेते हैं, उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा और क़ियामत के दिन न अल्लाह उन से बात करेगा, न उन्हें (रिआयत की नज़र से) देखेगा, न उन्हें पाक करेगा और उनका हिस्सा तो बस अज़ाब होगा, इंतिहाई दर्दनाक!

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾

● **अपने पसंदीदा मालों में से अल्लाह के रास्ते में खर्च करो :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : ९२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम नेकी के मुक़ाम तक उस वक़्त तक हरगिज़ नहीं पहुंचोगे, जब तक इन चीज़ों में से (अल्लाह के लिये वो माल) ख़र्च न करो, जो तुम्हें पसंद हैं और जो कुछ भी तुम ख़र्च करो, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

● **गुनाहों से बचने में अपनी पूरी ताकत लगा दो :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १०२ में अल्लाह तआला नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, जैसा के उस से डरने का हक़ है । और तुम्हें मौत न आए मगर इस हालत में के तुम मुसलमान हो ।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ یَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَیْرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

● **काम्याबी हासिल करने के लिये नेकी का हुक्म करो और बुराई से रोको :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १०४ में अल्लाह तआला ये हिदायत देते हैं : तुम्हारे दरमियान एक जमात ऐसी होनी चाहिये, जिस के अफ़राद (लोगों को) भलाई की तरफ़ बुलाऐं, नेकी का हुक्म करें और बुराई से रोकें, ऐसे ही लोग हैं जो कामयाबी पाने वाले हैं ।

كُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ

● **नेकी का हुक्म, बुराई से रोकने और अल्लाह पर ईमान की वजह से तुम बेहतरीन उम्मत हो :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : ११० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम वो बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के फ़ाइदे के लिये वुजूद में लाई गई है, तुम नेकी का हुक्म करते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो ।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾

● **अल्लाह तआला दिल की हर बात जानता है :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : ११९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : अल्लाह सीने में छिपी हूई बातों को ख़ूब जानता है ।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾

● **सूद खाने से बचो** : सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १३० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! तुम कई गुना बढ़ा कर सूद मत खाया करो और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम कामयाब हो जाओ ।

وَسَنَجْزِی الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۵﴾

● **शुक्र करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन बदला देंगे** : सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १४५ में अल्लाह का फ़रमान है : जो लोग शुक्र अदा करने वाले हैं, उन को हम जल्द ही उनका अज्र अता करेंगे ।

اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِیْنَ ﴿۱۵۹﴾

● **जो अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उस से मुहब्बत करते हैं :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १५९ में अल्लाह तआला ये ख़ुशख़बरी सुनाते हैं : अल्लाह यक़ीनन उस की ज़ात पर भरोसा करने वालों से मुहब्बत करता है ।

وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۱۸۰﴾

● **ज़कात अदा न करने वालों का अंजाम :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १८० में ये बताया गया है के ज़कात न देने वाले को अज़ाब होगा : जो लोग मालदार और साहिबे निसाब होने के बावजूद बख़ीली व कंजूसी की वजह से अपने मालों की ज़कात अदा नहीं करते हैं और माल जमा कर के रखते हैं, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं के कल क़ियामत के दिन उनका माल सांप बना कर उन के गले में डाल दिया जाएगा और क़ियामत के दिन उन के माल की तख़्तियां बना कर उन के जिस्म को दाग़ा जाएगा । तमाम मुसलमानों को आख़िरत के अज़ाब से डरना चाहिये और माल जमा कर के रखने के बजाए अपने मालों की पूरी पूरी ज़कात अदा करना चाहिये ।

وَمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾

● **दुनिया की ज़ाहिरी चमक दमक सिर्फ एक धोका है :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १८५ में अल्लाह तआला का ये फ़रमान है : ये दुन्यवी ज़िंदगी तो (जन्नत के मुक़ाबले में) धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं ।

لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾

● **नेक लोगों का इन्आम :** सूर–ए–आले इम्रान आयत नंबर : १९८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हुए अमल करते हैं, उन के लिये ऐसे बाग़ात हैं, जिनके नीचे नेहरें बेहती हैं, अल्लाह की तरफ़ से मेज़बानी के तौर पर वो हमेशा उन में रहेंगे और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो नेक लोगों के लिये कहीं बेहतर है ।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ﴿۱﴾

● **रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करो :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : १ में ये तरग़ीब दी गई है के रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी और अच्छा बरताओ करना चाहिये, सिला रहमी की बड़ी ताकीद आई है और इस पर बड़े अज्र व सवाब का वाअ्दा है, आख़िरत के सवाब के साथ साथ इस से दुन्या में भी बड़े फ़ाइदे हासिल होते हैं । जैसे उम्र में इज़ाफ़ा होना और रिज़्क़ में बरकत का होना वग़ैरा ।

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِیْرًا ﴿۲﴾

● **यतीमों का माल खाना बडा गुनाह है :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं : यतीमों का माल अपने माल के साथ मिलाकर मत खाओ, बेशक ये बड़ा गुनाह है ।

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْـًٔا وَّیَجْعَلَ اللّٰهُ فِیْهِ خَیْرًا كَثِیْرًا ﴿۱۹﴾

● **अपनी बीवीयों के साथ अच्छा सुलूक करो :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला ने शौहरों को यह हिदायत दी: तुम बीवीयों के साथ भले अंदाज़ में ज़िंदगी बसर करो और अगर तुम उन्हें पसंद नहीं करते, तो हो सकता है के तुम किसी चीज़ को पसंद न करते हो और अल्लाह ने उस में बहुत कुछ भलाई रख दी हो ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

● **दूसरों का माल नाहक तरीके से मत खाओ :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : २९, ३० में अल्लाह तआला का हुक्म है : ए ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के माल को नाहक़ तरीक़े से न खाओ, मगर यह के कोई तिजारत आपस की ख़ुशी से वुजूद में आई हो (तो वो जाइज़ है) और अपने आपको क़तल न करो (यानी दूसरे को हलाक कर के अपने आपको हलाकत में न डालो) यक़ीन जानो के अल्लाह तुम पर बहुत महेरबान है और (कुर्आनी हिदायात के बावजूद) अगर कोई शख़्स ज़्यादती और ज़ुल्म के तौर पर ऐसा करेगा, (यानी किसी का माल नाहक़ लेगा या किसी को नाहक़ क़तल करेगा) तो हम उस को जहन्नम में दाख़िल करेंगे और ये बात अल्लाह के लिये बिलकुल आसान है ।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

● **कबीरा गुनाहों से बचने पर छोटे गुनाह माफ होते हैं :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : अगर तुम इन बड़े बड़े गुनाहों से बचोगे, जिन से रोका गया है, तो तुम्हारे छोटे गुनाहों को हम ख़ुद माफ़ कर देंगे और तुम को (पाक साफ़ कर के) इज़्ज़त की जगह (यानी जन्नत) में दाख़िल करेंगे ।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَي النِّسَاۗءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۭ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۭ

● **घर में औरतों के सारे इंतिज़ामात का पूरा करना मर्द के ज़िम्मे है :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : मर्द औरतों के निगरां हैं, क्यूं के अल्लाह तआला ने उनमें से एक को दूसरे पर (यानी मर्दों को औरतों पर क़ुदरती तौर पर) फ़ज़ीलत दी है और क्यूं के मर्दों ने औरतों पर अपने मालों (यानी महर और बीवी की ज़रूरियात मसलन : खाने पीने वग़ैरा की चीज़ों) को ख़र्च किया है, जो औरतें नेक हैं वो (मर्द के इन फ़ज़ाइल व हुक़ूक़ की वजह से) इताअत व फ़र्मांबरदारी करती हैं और मर्द की ग़ैर मौजूदगी में (भी अपनी इज़्ज़त और शौहर के माल की) अल्लाह की तौफ़ीक़ से हिफ़ाज़त करती हैं (ऐसी औरतों की इस्लाम में बड़ी फ़ज़ीलत है)।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـــًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَۨا ﴿٣٦﴾

● **अल्लाह और बंदों के हुक़ूक अदा करो :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला हुक्म देता है : अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठेहराओ और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो, नीज़ रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, क़रीब वाले पड़ोसी, दूर वाले पड़ोसी, साथ बैठे (या साथ खड़े) हुए शख़्स और मुसाफ़िर के साथ और अपने ग़ुलाम बांदियों के साथ भी (अच्छा बरताओ रखो) । बेशक अल्लाह तआला इत्राने वाले और बड़ाई जताने वाले को पसंद नहीं करता ।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۭ

● **एक दिन ज़रूर मौत आएगी :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ७८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम जहां भी होगे (एक न एक दिन) मौत तुम्हें आ पकड़ेगी, चाहे तुम मज़बूत क़िलों में क्यूं न रेह रहे हो ।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾

● **जाइज़ सिफारिश पर सवाब और नाजाइज़ सिफारिश पर वबाल :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ८५ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स कोई अच्छी सिफ़ारिश करता है, उस को इस में से हिस्सा (यानी सवाब) मिलता है, जो शख़्स कोई बुरी सिफ़ारिश करता है, उसे इस बुराई से हिस्सा (यानी गुनाह) मिलता है और अल्लाह हर चीज़ पर नज़र रखने वाला है ।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗـــَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــًٔـا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

● **दूसरों पर इल्ज़ाम लगाने वालों को दोहरा अज़ाब होगा :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : ११० ता ११२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो शख़्स कोई बुरा काम कर गुज़रे या अपनी जान पर ज़ुल्म कर बैठे, फिर अल्लाह से माफ़ी मांग ले, तो वो अल्लाह को बहुत बख़्शने वाला, बड़ा महेरबान पाएगा और जो शख़्स कोई गुनाह का काम करे, तो वो इस से ख़ुद अपने आप को ही नुक़सान पहुंचाता है और अल्लाह पूरा इल्म भी रखता है, हिक्मत का भी मालिक है और अगर कोई शख़्स कोई ग़लती या गुनाह का काम करे, फिर उस का इल्ज़ाम किसी बेगुनाह के ज़िम्मे लगा दे, तो वो बड़ा भारी बोहतान और खुला गुनाह अपने ऊपर उठा लेता है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاۗءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

● **इन्साफ करो और सच्ची गवाही दो :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : १३५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! इन्साफ़ क़ाइम करने वाले बनो, अल्लाह की ख़ातिर गवाही देने वाले (बनो) चाहे वो गवाही तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ पड़ती हो, या वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ़, वो शख़्स (जिस के ख़िलाफ़ गवाही देने का हुक्म दिया जा रहा है) चाहे अमीर हो या ग़रीब, अल्लाह दोनों किस्म के लोगों का (तुम से) ज़्यादा ख़ैरख़्वाह है, लिहाज़ा ऐसी नफ़्सानी ख्वाहिश के पीछे न चलना, जो तुम्हें इन्साफ़ करने से रोकती हो और अगर तुम तोड़ मरोड़ करोगे (यानी ग़लत गवाही दोगे) या (सच्ची गवाही देने से) पेहलू बचाओगे, तो (याद रखना के) अल्लाह तुम्हारे तमाम कामों से पूरी तरह बाख़बर है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

● **अल्लाह, रसूल और तमाम आस्मानी किताबों पर ईमान लाना फर्ज़ है :** सूर–ए–निसा आयत नंबर : १३६ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : ए ईमान वालो! अल्लाह पर ईमान रखो और उस के रसूल पर और उस किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है और हर उस किताब पर जो उसने पेहले उतारी थी और जो शख़्स अल्लाह का, उस के फ़रिश्तों का, उस की किताबों का, उस के रसूलों का और यौमे आख़िरत का इन्कार करे, वो भटक कर गुमराही में बहुत दूर जा पड़ा है ।

تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢

● **नेक कामों में दूसरों की मदद करो और बुराई में किसी का साथ न दो :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : (ए ईमान वालो!) नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ुल्म में एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त है ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۪ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨

● **दुश्मनों के साथ भी इन्साफ करो :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! ऐसे बन जाओ के अल्लाह (के अहकाम की पाबंदी) के लिये हर वक़्त तय्यार हो (और) इन्साफ़ की गवाही देने वाले हो और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें नाइन्साफ़ी करने पर न उभारे, इन्साफ़ से काम लो, यही तरीक़ा तक़्वा से ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह यक़ीनन तुम्हारे तमाम कामों से पूरी तरह बाख़बर है ।

لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١٢

● **ईमान और नेक आमाल का बदला जन्नत है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : १२ में अल्लाह तआला बनी इस्राईल को तालीम देते हुए उम्मते मुहम्दिया को यह हिदायत दे रहे हैं: अगर तुम ने नमाज़ क़ाइम की, ज़कात अदा की, मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाए, इज़्ज़त से उनका साथ दिया और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया (यानी किसी ग़रीब की मदद की या किसी नेक काम में पैसे ख़र्च किये), तो यक़ीन जानो के मैं तुम्हारी बुराइयों का कफ़्फ़ारा कर दूँगा और तुम्हें उन बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बेहती होंगी, फिर उस के बाद भी तुम में से जो शख़्स कुफ़्र इख्तियार करेगा, तो दर हक़ीक़त वो सीधे रास्ते से भटक जाएगा ।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٦

● **कुर्आन इन्सानों को सीधा रास्ता दिखाता है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : १५, १६ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी आई है और (वो रोशनी) एक ऐसी किताब (यानी कुर्आन है) जो हक़ को वाज़ेह कर देने वाली है जिस के ज़रीये अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है, जो उस की ख़ुशनूदी चाहते हैं और उन्हें अपने हुक्म से अंधेरियों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाता है और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत अता फ़रमाता है ।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٧

● **पूरी दुनिया पर हुकूमत सिर्फ अल्लाह तआला ही की है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : १७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : आस्मानों पर और ज़मीन पर और जितनी चीज़ें इन दोनों के दरमियान हैं, अल्लाह तआला ही के लिये हुकूमत है और वो जिस चीज़ को चाहे पैदा कर दे और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है ।

وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ

● **इन्सानियत का एहतिराम सारी दुनिया के लिये हिफाज़त का ज़रीया है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : जिसने किसी इन्सान की जान बचाई, तो गोया उसने तमाम इन्सानों की जान बचाई ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٣٥

● **अच्छे आमाल बंदों को अल्लाह तआला से करीब कर देते हैं :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ३५ में तालीम दी गई है के आमाले सालिहा अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रीया हैं : अल्लाह तआला ने बंदों को दो अहम चीज़ों का हुक्म दिया है : (१) अल्लाह तआला को हाज़िर नाज़िर समझ कर हर वक़्त नाफ़रमानी और गुनाहों के बारे में अल्लाह से डरते रहो । (२) इबादत व इताअत, फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व नवाफ़िल और दीगर आमाले सालिहा के ज़रीये अल्लाह तआला का क़ुर्ब तलाश करो, इस लिये के अच्छे आमाल अल्लाह से क़ुर्ब का ज़रीया हैं ।

وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٤٢

● **हमेशा इन्साफ के साथ फैसला करना चाहिये :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ४२ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : अगर फ़ैसला करो, तो लोगों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो, यक़ीनन अल्लाह तआला इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं ।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝٦٦

● **ईमान और अल्लाह से डर कर ज़िंदगी गुज़ारना रिज़्क में बरकत का सबब है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ६६ में ये बात बताई गई है के हुज़ूर ﷺ पर ईमान लाना और तक़्वा इख्तियार करना नुज़ूले बरकत का सबब है : अल्लाह तआला ने अहले किताब के बारे में फ़रमाया के अगर वो तौरेत व इंजील में बताए गए हुक्म के मुताबिक़ हुज़ूर ﷺ पर ईमान ले आते और तक़्वा व परहेज़गारी इख्तियार करते, तो आस्मान से ख़ूब बारिश होती और ज़मीन से खाने पीने की चीज़ें पैदा होतीं और उन के रिज़्क़ में ख़ूब वुस्अत व बरकत होती, इस से मालूम हुवा के ईमान व ताअत और तक़्वा व परहेज़गारी रिज़्क़ में ख़ैर व बरकत का सबब है ।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝٧٩

● **एक दूसरे को बुराईयों से न रोकना बहुत बड़ा गुनाह है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ७९ में ये ज़िम्मेदारी बताई गई है के ईमान वालों को हुज़ूर ﷺ की लाई हुई शरीअ़त पर अमल करना ज़रूरी है : ईमान वालों को शरीअत के अहकाम की मुकम्मल पाबंदी करनी चाहिये और दूसरों को भी इस्लामी तालीमात पर चलने की तरग़ीब देते रेहना चाहिये । कोई बद अमली चाहे अपने अंदर हो या दूसरों के अंदर, उस को दूर करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये । ऐसा करने से अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ूशनूदी नसीब होगी और न रोकने की वजह से पेहली क़ौमों की तरह अल्लाह तआला की लानत और अज़ाब में मुब्तला होने का ख़तरा है, इस लिये चाहिये के हुज़ूर ﷺ जो दीन और शरीअत हम को देकर गए हैं, हम उस के मुताबिक़ अमल कर के अपनी दुन्या और आख़िरत को संवारने की फ़िक्र करें ।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

● **अल्लाह तआला ने हलाल और पाकीज़ा गिज़ा खाने का हुक्म दिया है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ८८ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है, उस में से हलाल पाकीज़ा चीज़ें खाओ और जिस अल्लाह पर तुम ईमान रखते हो, उस से डरते रहो ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

● **पेहले अपनी हिदायत की फ़िक्र करना चाहिये :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : १०५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र करो, अगर तुम सही रास्ते पर होगे, तो जो लोग गुम्राह हैं वो तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते, अल्लाह ही की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, उस वक़्त वो तुम्हें बताएगा के तुम (दुन्या में) क्या अमल करते रहे हो ।

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۲۰﴾

● **अल्लाह तआला की रज़ा सबसे बडी काम्याबी है :** सूर–ए–माइदा आयत नंबर : ११९, १२० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ये वह दिन है जिस में सच्चे लोगों को उनका सच फ़ाइदा पहुंचाएगा, उन के लिये वो बाग़ात होंगे, जिनके नीचे नहरें बेह रही होंगी, जिन में ये लोग हमेशा हमेश रहेंगे, अल्लाह उनसे ख़ुश है और ये अल्लाह से ख़ुश हैं, यही बड़ी ज़बरदस्त काम्याबी है, तमाम आस्मानों और ज़मीन और उन में जो कुछ है, उन सब की बादशाही अल्लाह ही के लिये है और वो हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है ।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۭ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ﴿۲﴾

● **अल्लाह तआला ने तै कर रखा है के कौन कब तक ज़िंदा रहेगा ? :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : अल्लाह ही वो ज़ात है, जिसने तुम को गीली मिट्टी से पैदा किया, फिर (तुम्हारी ज़िंदगी का) एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया (यानी तुम्हें दुन्या में इतने इतने दिन रेहना है) और (फिर मौत देने के बाद दोबारा ज़िंदा होने का) एक मुतअय्यन वक़्त उसी के पास है (यानी मौत देने के बाद तुम दोबारा ज़िंदा कब होगे? वो अल्लाह ही को मालूम है) फिर भी तुम शक में पड़े हुए हो ।

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿۳﴾

● **इन्सान का कोई राज़ अल्लाह तआला से छिपा हुवा नहीं है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : वही अल्लाह आस्मानों में भी है और ज़मीन में भी, वो तुम्हारे छिपे हुए भेद भी जानता है और खुले हुए हालात भी और जो कुछ कमाई तुम कर रहे हो, उसे भी जानता है ।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

● **गुनाहों से बचने वालों के लिये आखिरत बेहतरीन घर है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : दुन्यवी ज़िंदगी तो एक खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं और यक़ीन जानो के जो लोग तक़्वा इख्तियार करते हैं, उन के लिये आख़िरत वाला घर कहीं ज़्यादा बेहतर है, तो क्या इतनी सी बात तुम्हारी अक़्ल में नहीं आती?

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾

● **हर तरह का इल्म अल्लाह तआला ही के पास है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : ५९, ६० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब की चाबियाँ हैं, जिन्हें उस के सिवा कोई नहीं जानता और समंदर और ख़ुश्की में जो कुछ है वो उस से वाक़िफ़ है (उस के इल्म में है), किसी दरख़्त का कोई पत्ता नहीं गिरता, जिस का उसे इल्म न हो और ज़मीन की अंधेरियों में कोई दाना या कोई ख़ुश्क या तर चीज़ ऐसी नहीं है, जो एक खुली किताब में दर्ज न हो और वही है जो रात के वक़्त (नींद में) तुम्हारी रूह (एक हद तक) क़ब्ज़ कर लेता है और दिन भर में तुम ने जो कुछ किया होता है, उसे ख़ूब जानता है, फिर उस (नए दिन) में तुम्हें नई ज़िंदगी देता है ताके (तुम्हारी उम्र की) मुक़र्ररा मुद्दत पूरी हो जाए, फिर उसी के पास तुम को लौट कर जाना है, उस वक़्त वह तुम्हें बताएगा के तुम क्या क्या करते थे ।

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۭ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۙ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۭ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۭ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

● **नमाज़ की पाबंदी करो और अल्लाह से डरो :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : ७२, ७३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : नमाज़ क़ाइम करो और उस (अल्लाह की नाफ़रमानी) से डरते रहो और वही है जिसकी तरफ़ तुम सब को जमा कर के ले जाया जाएगा और वही ज़ात है जिसने आस्मानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है और जिस दिन वो (क़ियामत के दिन से) कहेगा के तू हो जा, तो वो हो जाएगा (यानी अल्लाह तआला जब चाहेगा, क़ियामत को वुजूद में आने का हुक्म दे देगा और वो वुजूद में आ जाएगी), अल्लाह का क़ौल बरहक़ है और जिस दिन सूर फूँका जाएगा, उस दिन बादशाही उसी की होगी, वो ग़ाइब व हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है और वही बड़ी हिक्मत वाला, पूरी तरह बाख़बर है ।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾

● **दूसरे मज़ाहिब के माबूदों को बुरा–भला नहीं केहना चाहिये :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १०८ में ये तालीम दी गई है के दूसरे मज़ाहिब के माबूदों को बुरा मत कहो : अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दूसरे मज़ाहिब के माबूदों को बुरा भला केहने से मना फ़रमाया के कहीं ऐसा न हो के तुम उनके झूटे ख़ुदाओं की बुराई बयान करने लगो और वो जज़्बात में आकर अल्लाह तआला को बुरा भला केहने लगें, इस तरह तुम इस बुराई का ज़रीया बन जाओ। इस हुक्म से मालूम हुवा के जो काम ख़ुद करना जाइज़ नहीं है । दूसरे के लिये उस का ज़रीया और सबब बनना भी दुरुस्त नहीं है ।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾

● **गुनाह की सज़ा ज़रूर मिलेगी :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १२० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: तुम ज़ाहिरी और बातिनी दोनों किस्म के गुनाह छोड़ दो, यह यक़ीनी बात है के जो लोग गुनाह करते हैं, उन्हें इन तमाम जुर्मों की जल्द ही सज़ा मिलेगी जिनको वो किया करते थे ।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾

● **इस्राफ करने वालों को अल्लाह पसंद नहीं करता :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १४१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : अल्लाह वो है जिसने बाग़ात पैदा किये जिन में से कुछ (बैलदार हैं जो) सहारों से ऊपर चढ़ाए जाते हैं, कुछ सहारों के बग़ैर बुलंद होते हैं और खजूर के बाग़ात और खेतियां, जिनके ज़ाइक़े अलग अलग हैं और ज़ैतून और अनार, जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ भी, जब यह दरख़्त फल दें तो उन के फलों को खाने में इस्तेअमाल करो और जब उनकी कटाई का दिन आए, तो अल्लाह का हक़ अदा करो (यानी उस का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो) और फ़ुज़ूलखर्ची न करो, याद रखो! वो फ़ुज़ूलखर्च लोगों को पसंद नहीं करता ।

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾

● **शैतान इन्सान का खुला हुवा दुश्मन है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १४२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : शैतान के पीछे न चलो, यक़ीन जानो, वो तुम्हारे लिये एक खुला दुश्मन है ।

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ

● **हमारा और हमारी औलाद का रिज़्क अल्लाह तआला के ज़िम्मे है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १५१ में अल्लाह तआला हुक्म सुनाते हैं : ग़रीबी की वजह से अपने बच्चों को क़तल न करो, हम तुम्हें भी रिज़्क़ देंगे और उनको भी और बे–हयाई के कामों के क़रीब भी न जाओ, चाहे वो बे–हयाई खुली हुई हो या छिपी हुई हो ।

وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

● **हमेशा हक बात केहना चाहिये :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १५२ में अल्लाह का हुक्म है : जब कोई बात कहो, तो इन्साफ़ से काम लो, चाहे मुआमला अपने क़रीबी रिश्तेदार ही का हो ।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

● **दीने इस्लाम पर चलने ही में नजात है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १५३ में यह रेहनुमाई की गई है के सीराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना ज़रूरी है : अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ को आख़री रसूल बना कर दुन्या में भेजा और उन्हें इस बात का हुक्म दिया के तुम लोगों को सीराते मुस्तक़ीम पर चलने की दावत दो और शैतानी कामों और उस के बताए हुए रास्तों के पीछे न पड़ो, वर्ना तुम सीधे रास्ते से भटक जाओगे, लिहाज़ा मुत्तक़ी व परहेज़गार बनने के लिये आप ﷺ की दावत को क़ुबूल कर के हर मुसलमान को सीराते मुस्तक़ीम पर चलना ज़रूरी है ।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

● **एक नेकी का सवाब दस गुना मिलता है :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १६० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो शख़्स कोई नेकी लेकर आएगा, उस के लिये उस जैसी दस नेकियों का सवाब है और जो शख़्स कोई बुराई लेकर आएगा, तो उस को सिर्फ उसी एक बुराई की सज़ा दी जाएगी और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा ।

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾

● **कियामत के दिन कोई शख़्स किसी दूसरे का गुनाह अपने सर नहीं लेगा :** सूर–ए–अन्आम आयत नंबर : १६४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो कोई शख़्स कोई कमाई करता है, उस का नफ़ा नुक़्सान किसी और पर नहीं, ख़ुद उसी पर पड़ता है और (क़ियामत के दिन) कोई बोझ उठाने वाला किसी और का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ तुम सब को लौटना है, उस वक़्त वो तुम्हें वो सारी बातें बताएगा, जिन में तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे ।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾

● **शैतान के मक्र व फरेब से हमेशा होशियार रेहना चाहिये :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : १६ ता १८ में यह बताया गया है के शैतान के धोके से होशियार रेहना चाहिये: जब शैतान ने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया, तो क़ियामत के दिन तक अल्लाह से मोहलत मिलने पर केहने लगा के मैं तेरे बंदों को चारों तरफ़ से गुमराह करने की कोशिश करूँगा, जिसके नतीजे में अक्सर लोग शुक्रगुज़ार नहीं रहेंगे, अल्लाह तआला ने शैतान को अपने दरबार से ज़लील कर के निकाल दिया और फ़रमाया के मैं तुझ से और तेरी पैरवी करने वालों से जहन्नम को भर दूंगा । लिहाज़ा हमें हर वक़्त शैतान के मकर व फ़रेब से होशियार रेहना चाहिये और जन्नत में ले जानेवाले आमाल में लगे रेहना चाहिये ।

وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾

● **खाने पीने में हद से तजावुज़ न करो :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला हिदायत देते हैं : खाओ और पियो और फ़ुज़ूलखर्ची न करो, याद रखो! के अल्लाह फ़ुज़ूलखर्ची करने वालों को पसंद नहीं करता ।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

● **खौफ और उम्मीद के साथ अल्लाह तआला से दुआ करना चाहिये :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : ५६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद फ़साद मत फैलाओ और उस (अल्लाह) की इबादत इस तरह करो के दिल में ख़ौफ़ भी हो और उम्मीद भी, यक़ीनन अल्लाह की रहमत नेक लोगों से क़रीब है ।

فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ .

● **नाप तौल में कमी नहीं करना चाहिये :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : ८५ में अल्लाह तआला का हुक्म है : नाप तौल पूरा पूरा किया । करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम कर के न दिया करो ।

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾ ـــ (إلى آية ١٢١)

● **माल व अस्बाब न होते हुए भी हक पर काइम रहो :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : ११० ता १२१ में यह बशारत दी गई है के अल्लाह तआला की मदद हक़ के साथ होती है: हक़ पर क़ाइम रेहने वाला चाहे अकेला ही क्यूं न हो, ग़ालिब आकर ही रेहता है । फ़िरऔन ने हज़रते मूसा عليه السلام को जादूगर केह कर अपने मुल्क के बड़े बड़े जादूगरों को उनके मुक़ाबले की दावत दी, जादूगरों ने नज़रबंदी कर दी, जिस से उनकी रस्सियां सांप की तरह रेंगती हुई नज़र आने लगीं, हज़रते मूसा عليه السلام ने अल्लाह के हुक्म से अपना असा डाला, जो उनकी सारी रस्सियों को निगल गया । हक़ का ग़लबा हुआ और जादूगर सज्दे में गिर कर ईमान ले आए । लिहाज़ा हमें हमेशा हक़ वाले रास्ते पर चलना चाहिये ।

قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

● **अल्लाह से डरने वाले और ज़कात अदा करने वाले मोमिन बंदों के लिये रहमत :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : १५६ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : अपना अज़ाब तो मैं उसी पर नाज़िल करता हूँ, जिस पर चाहता हूं और जहां तक मेरी रहमत का ताल्लुक़ है, वो हर चीज़ पर छाई हुई है, चुनान्चे मैं यह रहमत (मुकम्मल तौर पर) उन लोगों के लिये लिखूँगा जो तक़्वा इख्तियार करें और ज़कात अदा करें और जो हमारी आयतों पर यक़ीन रखें ।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ
وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾

● **शरीअ्त पर अमल करने वालों के लिये काम्याबी है :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : १५७ में बताया गया है के तौरात व इंजील में भी आपकी सिफ़ात का ज़िक्र है: तौरात व इंजील में हज़रत मुहम्मद ﷺ की सिफ़ात बयान की गई हैं और आख़री रसूल होने की बशारत दी गई है के वो आख़री रसूल उम्मी होगा, यानी दुन्या में किसी से कुछ नहीं पढ़ेगा, बल्के वही के ज़रीये उस को उलूम अता किये जाऐंगे, वो लोगों को अच्छी बातों का हुक्म करेंगे और बुरी बातों से रोकेंगे, उनके लिये पाकीज़ा चीज़ों को हलाल और नापाक व गंदी चीज़ों को हराम क़रार देंगे और उन से सख़्त अहकाम व पाबंदियां हटा कर आसान तरीक़े मुक़र्रर करेंगे, लिहाज़ा हमें चाहिये के नबिये करीम ﷺ को अल्लाह के सच्चे और आख़री नबी मान कर उनकी लाई हुई शरीयत के मुताबिक़ अमल करें इसी में हमारी दुन्या व आख़िरत की काम्याबी है ।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾

● **तमाम इन्सान अल्लाह के एक होने का इकरार कर चुके हैं :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : १७२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (ए रसूल! लोगों को वो वक़्त याद दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम के बेटों की पीठ से उन की सारी औलाद को निकाला था और उन को ख़ुद अपने ऊपर गवाह बनाया था (और पूछा था) के क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने जवाब दिया था के क्यूं नहीं? (यक़ीनन आप हमारे रब हैं) हम सब इस बात की गवाही देते हैं, (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं के यह इक़रार हमने इस लिये लिया था) ताके तुम क़ियामत के दिन ये न केह सको के हमें तो ये बात मालूम न थी (और हमें आपसे किया हुवा वाअ्दा याद ही नहीं था) ।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾

● **कुर्आने पाक को गौर से खामोशी के साथ सुनना चाहिये :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : २०४ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : जब कुर्आन पढ़ा जाए, तो उस को कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो ताके तुम पर रहमत हो ।

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾

● **सुबह व शाम अल्लाह तआला का ज़िक्र करो :** सूर–ए–अअ्राफ़ आयत नंबर : २०५ में अल्लाह तआला का इरशाद है : अपने रब का सुबह व शाम ज़िक्र किया करो, अपने दिल में भी, आजिज़ी और ख़ौफ़ के जज़्बात के साथ और ज़बान से भी, आवाज़ बहुत बुलंद किये बग़ैर और उन लोगों में शामिल न हो जाना जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١﴾

● **अल्लाह और रसूल की कामिल इताअत ईमान की अलामत है :** सूर–ए–अन्फ़ाल आयत नंबर : १ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: तुम अल्लाह से डरो और आपस के ताल्लुक़ात को दुरुस्त कर लो और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो, अगर तुम वाक़ई ईमान वाले हो ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

● **अल्लाह और रसूल की इताअत से मुंह नहीं मोडना चाहिये :** सूर–ए–अन्फ़ाल आयत नंबर : २० ता २२ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : ए ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और उस इताअत से मुंह न मोड़ो, जब के तुम (अल्लाह और रसूल के अहकाम) सुन रहे हो और उन लोगों की तरह न हो जाना जो केहते तो हैं के हमने सुन लिया, मगर वो (हक़ीक़त में) सुनते नहीं हैं, यक़ीन रखो के अल्लाह के नज़दीक बदतरीन जानवर वो बेहरे गूँगे लोग हैं जो अक़ल से काम नहीं लेते ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

● **अमानत में खियानत मत करो :** सूर–ए–अन्फ़ाल आयत नंबर : २७ में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ए ईमान वालो! अल्लाह और रसूल से बेवफ़ाई मत करो और जानते बूझते अपनी अमानतों में ख़ियानत मत करो ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

● **तक्वा का इन्आ्म :** सूर–ए–अन्फ़ाल आयत नंबर : २९ में अल्लाह तआला का इरशाद है : ए ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो वो तुम्हें (हक़ व बातिल की) तमीज़ अता कर देगा और तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा और तुम को बख़्श देगा और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है ।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

● **आपस में लडाई झगडा के दो बडे नुक्सान :** सूर-ए-अन्फ़ाल आयत नंबर : ४६ में यह नसीहत की गई है के आपस में लड़ने झगड़ने से बड़ा नुक़सान होता है : ईमान वालों को आपस में लड़ने झगड़ने से मना किया गया है और ये बताया गया है के अगर ईमान वाले आपस में लड़ाई झगड़ा करेंगे, तो उनके दो नुक़सान होंगे, एक तो यह के ईमान वाले बुज़्दिल और कमज़ोर हो जाएंगे क्यूं के जब आपस में इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ होता है, तो हर एक शख़्स अपने अंदर तन्हा होने के बावजूद पूरी जमात की ताक़त महसूस करता है और जब आपस में इख्तिलाफ़ होगा, लड़ाई झगड़ा होगा, तो कोई किसी का साथ देने के लिये तय्यार न होगा । दूसरा नुक़सान यह बताया गया के तुम्हारा रोब ख़त्म हो जाएगा और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी, जिस की वजह से तुम दुश्मन की नज़र में हक़ीर और ज़लील हो जाओगे ।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

● **हालात आने पर जमे रहो :** सूर-ए-तौबा आयत नंबर : १६ में यह हिदायत दी गई है के मुसीबतों पर सब्र से काम लेना चाहिये, मुसीबत और हालात अल्लाह की तरफ़ से आते हैं और हालात का आना अल्लाह की तरफ़ से आज़माइश होती है, इसी लिये अल्लाह तआला क़ुर्आने करीम में अपने बंदों को ख़िताब कर के फ़रमाते हैं, जिस तरह पेहली उम्मतों को आज़माइश में डाला गया, तकलीफ़ें पहुंचाई गईं और दुश्मनों से मुक़ाबला करना पड़ा, इसी तरह उम्मते मुहम्मदिया को भी इम्तिहान में डाला जाएगा, इस इत्तिला के बावजूद उन के लिये यह ज़रूरी है के अमन व आफ़ियत और सलामती की दुआ करते रहें और अगर अल्लाह की तरफ़ से कोई आज़माइश आजाए, तो सब्र के साथ अल्लाह तआला की रजामंदी हासिल करने के लिये जमे रहें ।

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝

● **ज़कात न देने वालों की सज़ा :** सूर-ए-तौबा आयत नंबर : ३४, ३५ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जो लोग सोने चांदी को जमा कर कर के रखते हैं और इस को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, उन को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश-ख़बरी सुना दो, जिस दिन इस माल व दौलत को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर इस से उन लोगों की पेशानियां और उन की करवटें और उन की पीठें दाग़ी जाएँगी (और कहा जाएगा के) यह है वो ख़ज़ाना जो तुमने अपने लिये जमा किया था! अब चखो उस खज़ाने का मज़ा जो तुम जमा कर के रखा करते थे ।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

● **माल व औलाद तुम्हें सीधे रास्ते से भटका न दें :** सूर-ए-तौबा आयत नंबर : ५५ में यह बात बयान की गई है के माल और औलाद इन्सान की आज़माइश का ज़रीया हैं: अल्लाह तआला ने माल और औलाद के बारे में हुक्म बयान फ़रमाया के अगर हलाल माल ख़ैर के कामों में ख़र्च करोगे, तो यह तुम्हारी नेकियों में ज़्यादती और आख़िरत में काम्याबी का ज़रीया होगा, वर्ना यही माल दुन्या में वबाले जान और आख़िरत में सख़्त अज़ाब का सबब बनेगा, इसी तरह अगर औलाद के दीन और आख़िरत की फ़िक्र की, तो दुन्या में मां बाप की आँखों की ठंडक और आख़िरत में नजात का ज़रीया बनेगी और अगर दीन से दूरी और आख़िरत से ग़ाफ़िल रख कर सिर्फ दुन्या के ऐश व राहत में मसरूफ़ रखा, तो यही औलाद उन के लिये दुन्या में तकलीफ़ और आख़िरत में अज़ाब का सबब बनेगी ।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

● **ईमान वालों से अल्लाह का वाअ्दा :** सूर-ए-तौबा आयत नंबर : ७१, ७२ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं, वो नेकी का हुक्म करते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की फ़र्मांबरदारी करते हैं, ये ऐसे लोग हैं जिनको अल्लाह अपनी रहमत से नवाज़ेगा, यक़ीनन अल्लाह तआला ज़बरदस्त हिक्मत वाला है, अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से वाअदा किया है, उन बाग़ात का जिन के नीचे नहरें बेहती होंगी, जिनमें वो हमेशा रहेंगे और उन पाकीज़ा मकानात का जो हमेशा रेहने वाले बाग़ात में होंगे और अल्लाह की रज़ामंदी सब से बड़ी चीज़ है (जो जन्नत वालों को नसीब होगी) यही तो ज़बरदस्त काम्याबी है ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝

● **अल्लाह से किये हुए अहद को पूरा न करने का अंजाम :** सूर-ए-तौबा आयत नंबर : ७५ ता ७७ में यह हुक्म दिया गया है के अल्लाह से किये हुए अह्द को पूरा करना चाहिये : दुन्या में माल व दौलत के बहुत से हरीस व लालची ऐसे भी हैं जो दिल ही दिल में अल्लाह से यह अह्द करते हैं के अगर हमें दौलत हासिल हो जाएगी, तो हम अल्लाह की राह में ख़र्च करेंगे, अल्लाह और उस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करेंगे, फिर जब अल्लाह उन्हें अपनी नेअ्मतों से नवाज़ता है, तो ख़ुदा से किये हुए वादों को भूल जाते हैं, जिस के नतीजे में अल्लाह तआला उनके दिलों में निफ़ाक़ पैदा कर देता है और उनके ईमान व आमाल ख़तरे में पड़ जाते हैं, लिहाज़ा अल्लाह से किये हुए अह्द को पूरा करना चाहिये ।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾

● **झूट से बचो :** सूर–ए–तौबा आयत नंबर : ९४ में यह नसीहत की गई है के झूटे उज़्र और बहानाबाज़ी की बुराई से बचो : ग़ज़्व–ए–तबूक में शरीक न होने वाले मुनाफ़िक़ीन रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर झूटे उज़्र पेश करने लगे, तो उन से कहा गया के झूटी बातें बनाने से कोई फ़ाइदा नहीं, अल्लाह तआला तुम्हारे निफ़ाक़ व झूट पर हम को मुत्तले कर चुका है, उस के यहां तुम्हारी कोई मक्कारी छिपी हुई नहीं है, वो बहुत जल्दी तुम्हारे काले करतूतों की तुम को सज़ा देगा । अल्लाह की सज़ा से बचने के लिये हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है के झूटे उज़्र से अपने आपको बचाए।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾

● **हर अमल में इख्लास ज़रूरी है :** सूर–ए–तौबा आयत नंबर : ९९ में यह बात बताई गई है के अल्लाह की राह में इख्लास के साथ ख़र्च करने वाले अल्लाह की रहमत के मुस्तहिक़ हैं: जो लोग अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं और इख्लास के साथ अल्लाह की रज़ा और उस का क़ुर्ब हासिल करने और रसूलुल्लाह ﷺ की दुआएं लेने के लिये अपना माल ख़र्च करते हैं, अल्लाह तआला उनको ज़रूर अपनी रहमत में जगह दे कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, अल्लाह तआला हम सब को इख्लास के साथ ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपनी रहमत के साये में जगह अता फ़रमाए ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

● **सच्चों की सोहबत इख्तियार करो :** सूर–ए–तौबा आयत नंबर : ११९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहा करो ।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

● **अल्लाह ने छः दिनों में आस्मान व ज़मीन को पैदा किया :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : बेशक तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है, जिसने सारे आस्मानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया ।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۳۲﴾

● **हमें सब कुछ अल्लाह ही ने दिया है :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : ३१, ३२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : (ए पैग़म्बर! लोगों से) कहो के कौन है जो तुम्हें आस्मान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुँचाता है? और कौन है जो सुनने और देखने की कुव्वतों का मालिक है? और कौन है जो जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से निकाल लाता है? और कौन है जो हर काम का इंतिज़ाम करता है? तो यह लोग कहेंगे के (ऐसी ज़ात तो) अल्लाह (ही की है), तो तुम उन से कहो के क्या फिर भी तुम अल्लाह से नहीं डरते? यही अल्लाह तुम्हारा सच्चा रब है, फिर हक़ वाज़ेह हो जाने के बाद गुम्राही के सिवा क्या बाक़ी रेह गया? उस के बावजूद तुम क्यूं उल्टे रास्ते पर जा रहे हो ।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾

● **कुर्आन सरासर नसीहत, दिल की बीमारियों के लिये शिफा और हिदायत की किताब है :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : ५७ में यह हिदायत दी गई है के कुर्आन दिलों की बीमारी के लिये शिफ़ा है : कुर्आन मजीद को شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ कहा गया है, यानी उस के ज़रीया दिलों की बीमारियों का इलाज होता है, मतलब यह है के जो शख़्स उस की हिदायात पर अमल करे, उस का दिल रुहानी बीमारियों से शिफ़ायाब हो जाता है । हसद, कीना, तकब्बुर, बुख़्ल, ख़ुदपसंदी, दुन्या की मुहब्बत और वो सब उमूर जो लोगों के दिलों को तबाह कर देते हैं, कुर्आन मजीद में इन सब का इलाज है, बशर्ते के इस इलाज को इख्तियार किया जाए । लिहाज़ा कुर्आन की हिदायात पर अमल करो, उस करीम आक़ा की ज़ात से क्या बईद है के वो जिस्मानी बीमारियों से भी शिफ़ा अता फ़र्मा दे ।

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾

● **अल्लाह पर बोहतान बांधने वाले कभी काम्याब नहीं हो सकते :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : ६९ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जो लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बाँधते हैं, वो फ़लाह व काम्याबी नहीं पाएँगे ।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ

● **अल्लाह के सिवा कोई नफा व नुक्सान नहीं पहुंचा सकता :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : १०६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : अल्लाह तआला को छोड़ कर किसी ऐसे को न पुकारना जो तुम्हें न कोई फ़ाइदा पहुंचा सकता है, न कोई नुक़्सान ।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۷﴾

● **नफा व नुक्सान पहुंचाने का मालिक सिर्फ अल्लाह है :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : १०७ में अल्लाह का फ़रमान है: अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचा दे, तो उस के सिवा कोई नहीं है जो उसे दूर कर दे और अगर वो तुम्हें कोई भलाई पहुंचाने का इरादा कर ले, तो कोई नहीं है जो उस के फ़ज़्ल का रुख फेर दे, वो अपना फ़ज़ल अपने बंदों में से जिस को चाहता है पहुंचा देता है और वो बहुत बख़्शने वाला, बड़ा महेरबान है ।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۱۰۸﴾

● **हिदायत का नफा और गुम्राही का नुक्सान खुद इन्सान ही को मिलेगा :** सूर–ए–यूनुस आयत नंबर : १०८ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : (ए पैग़म्बर!) केह दो के लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ (यानी सच्चा दीन) आ गया है, अब जो शख़्स हिदायत का रास्ता अपनाएगा, वो ख़ुद अपने फ़ाइदे के लिये अपनाएगा और जो गुम्राही इख्तियार करेगा, उस की गुम्राही का नुक़्सान ख़ुद उसी को पहुँचेगा और मैं तुम्हारे कामों का ज़िम्मेदार नहीं हूँ ।

وَمَامِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦

● **रोज़ी का मालिक सिर्फ अल्लाह ही है :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : ६ में यह ख़बर दी गई है के मख्लूक़ को रोज़ी देने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह ही की है : अल्लाह तआला ने तमाम जानदार और इन्सानों की रोज़ी अपने ज़िम्मा ले रखी है, पैदाइश से ले कर वफ़ात तक वही उन की रोज़ी का मुकम्मल इंतिज़ाम करता है, कोई भी इन्सान अपनी रोज़ी मुकम्मल किये बग़ैर दुन्या से रुख्सत नहीं हो सकता, इस लिये हर मुसलमान को इस बात पर यक़ीन करते हुए जाइज़ व हलाल रोज़ी हासिल करना चाहिये और नाजाइज़ व हराम से बचने का एहतिमाम करना चाहिये ।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝١٥ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦

● **दुनिया चाहने वाले आखिरत में महरूम रहेंगे :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : १५, १६ में इस बात की तालीम दी गई है के नेक अमल से दुन्या का फ़ाइदा तलब करना बहुत बुरी बात है : कोई इन्सान अगर अपने नेक अमल से सिर्फ दुन्या के फ़ाइदे मसलन : शोहरत व इज़्ज़त वग़ैरा की निय्यत करे, अल्लाह तआला को राज़ी करने का कोई इरादा न हो, तो ऐसे अमल का कोई एतिबार नहीं, अगर वो ग़ैर ईमान वाला है, तो आख़िरत में हमेशा की दोज़ख़ में जाएगा और अगर मोमिन है, तो उस के अमल का अज्र व सवाब नहीं मिलेगा। हाँ! दुन्या में जिस ग़रज़ के लिये वो अमल किया होगा अल्लाह अगर चाहेंगे, तो उसे उस में काम्याब कर देंगे, मगर आख़िरत में वो बिलकुल महरूम रहेगा, लिहाज़ा मालूम हुवा के नेक अमल से दुन्या का फ़ाइदा तलब करना बहुत बुरी बात है ।

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٥٢

● **तौबा व इस्तिगफार रहमत व बरकत का सबब है :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : ५२ में यह बशारत दी गई है के सच्ची तौबा करने के बहुत से फ़ाइदे हैं : हज़रत हूद عليه السلام ने अपनी क़ौम के लोगों को गुनाहों से तौबा और आइन्दा गुनाह न करने का हुक्म देकर फ़रमाया के ऐसा करने पर अल्लाह तआला तुम्हारे साथ रहमत का मुआमला फ़रमाएगा, तुम्हारी कहतसाली व तंगदस्ती को ख़ुशहाली में तब्दील कर के तुम्हारी कुव्वत व ताक़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा, मालूम हुवा के गुनाहों से बचने और सच्ची तौबा करने पर अल्लाह तआला हर मुश्किल से नजात और ख़ैर व बरकत और तरक्कियात से नवाज़ता है।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝٥٨ وَتِلْكَ عَادٌ ۘ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝٥٩ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝٦٠

● **नबी की नाफरमानी से बचना चाहिये :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : ५८ ता ६० में यह बताया गया है के अल्लाह के भेजे हुए रसूल की नाफ़रमानी का अंजाम बहुत बुरा होता है: हज़रत हूद عليه السلام ने अपनी क़ौम आद को अल्लाह की इबादत और गुनाहों से तौबा करने की दावत दी, तो लोगों ने कहा के हम तुम्हारी वजह से अपने माबूदों को बिलकुल नहीं छोड़ सकते, हूद عليه السلام ने साफ़ तौर पर केह दिया के मैं अपना फ़र्ज़ पूरा कर चुका, अगर तुम गुनाहों से बाज़ नहीं आओगे, तो अल्लाह तआला तुम्हें हलाक कर के दूसरी क़ौम को तुम्हारे माल व दौलत का वारिस बना देगा, चुनांचे यह नाफ़रमान और घमंडी क़ौम आठ दिन और सात रातों तक चलने वाली शदीद तूफ़ानी हवाओं से हलाक कर दी गई, लिहाज़ा वक़्त के रसूल की नाफ़रमानी से बचना चाहिये ।

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝١١٤ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١٥

● **नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : ११४, ११५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए (पैग़म्बर!) दिन के दोनों किनारों पर और रात के हिस्सों में नमाज़ क़ाइम करो, यक़ीनन नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, यह एक नसीहत है उन लोगों के लिये जो नसीहत मानें और सब्र से काम लो, इस लिये के अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ् नहीं करता ।

وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٣

● **अल्लाह तआला को हमारे सब कामों की खबर है :** सूर–ए–हूद आयत नंबर : १२३ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा रब इस से बे–ख़बर नहीं है ।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥

● **ताबीर जानने वाले हमदर्द ही के सामने ख्वाब बयान करना चाहिये :** सूर–ए–यूसुफ़ आयत नंबर : ५ में यह नसीहत की गई है के हर शख़्स के सामने ख्वाब बयान करना मुनासिब नहीं है: हर शख़्स के सामने अपना ख्वाब बयान करने से मना किया गया है, क्यूं के कभी ख्वाबों के ज़रीया अल्लाह तआला अपने बंदों की रेहनुमाई भी करना चाहता है, इस लिये ख्वाब उसी शख़्स से बयान करना चाहिये, जो उस की ताबीर जानता हो और ताबीर बताने की सलाहियत रखता हो और ख्वाब देखने वाले से हमदर्दी रखता हो, लिहाज़ा हर शख़्स के सामने ख्वाब बयान करने से बचना चाहिये ।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٣ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝٢٤

● **गुनाहों से बचने के लिये अल्लाह से मदद मांगो :** सूर–ए–यूसुफ़ आयत नंबर : २३,२४ में यह रेहनुमाई की गई है के गुनाहों से बचने के लिये भी अल्लाह ही से मदद माँगना चाहिये: इन्सान को चाहिये के गुनाहों से बचने और नेकी पर क़ाइम रेहने के लिये हर हाल में अल्लाह तआला से मदद मांगे और उसी की तरफ़ रुजू करे, जब इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जे हो कर उस से फ़रयाद करता है, तो अल्लाह तआला ज़रूर उस की मदद करते हैं, चुनांचे जब हज़रत यूसुफ़ عليه السلام इंतिहाई सख़्त आज़माइश में मुब्तला हुए और उन के ख़रीदार अज़ीज़े मिस्र की नौजवान व हसीन तरीन बीवी ने बंद कमरे की तन्हाई में उन को गुनाह की दावत दी, तो हज़रत यूसुफ़ عليه السلام फ़ौरन अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जे हो कर उस की पनाह मांगने लगे, चुनांचे अल्लाह तआला ने उनकी मदद फ़रमाई और बंद दरवाज़ों को अपनी क़ुदरत से उन के लिये खोल दिया, इस तरह हज़रत यूसुफ़ عليه السلام गुनाह में मुब्तला होने से बच गए ।

قَالَ اِنَّمَآ اَشۡكُوۡا بَثِّىۡ وَحُزۡنِىۡۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۶﴾ يٰبَنِىَّ اذۡهَبُوۡا فَتَحَسَّسُوۡا مِنۡ يُّوۡسُفَ وَاَخِيۡهِ وَلَا تَايۡـَٔسُوۡا مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايۡـَٔسُ مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۸۷﴾

● **अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद नहीं होना चाहिये :** सूर-ए-यूसुफ़ आयत नंबर : ८६,८७ में यह सबक़ दिया गया है के मुसीबत में अल्लाह ही से फ़रयाद करना चाहिये और अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये: हज़रत याकूब عليه السلام के दूसरे लड़के बिनियामीन भी उन से जुदा हो गए, तो उन्होंने यही कहा के मैं अपनी परेशानी और ग़म की फ़रयाद अल्लाह तआला ही के सामने पेश करता हूँ, इस से सबक़ मिलता है के मुश्किल हालात में अल्लाह तआला ही की तरफ़ रुजू करना चाहिये, हज़रत याकूब عليه السلام को अपने दोनों बेटों यूसुफ़ عليه السلام और बिनियामीन की जुदाई का बड़ा सदमा हुवा, मगर वो अल्लाह की रहमत से फिर भी मायूस नहीं हुए और अपने बेटों को तलाश करने का हुक्म दे कर फ़रमाया के अल्लाह तआला मुझे इन दोनों से ज़रूर मिलाएगा, अंबिया عليهم السلام की तालीम व सुन्नत से पता चलता है के रंज व ग़म और नुक़्सान के मौक़ा पर इन्सान को अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये, बल्के इस पर मुकम्मल भरोसा रखना चाहिये ।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوۡمٍ سُوۡٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّالٍ ﴿۱۱﴾

● **जब कोई कौम खुद ही अपने हालात दुरुस्त न कर लें, उस वक्त तक अल्लाह की मदद नहीं आती :** सूर-ए-रअ्द आयत नंबर : ११ में यह अहम बात बताई गई है के हर इन्सान ख़ुद अपने आमाल का ज़िम्मेदार है: जब तक किसी क़ौम के आमाल अच्छे होते हैं, तो अल्लाह तआला उस के साथ अच्छा सुलूक करता रेहता है, लेकिन जब कोई क़ौम फ़साद और बिगाड़ की राह इख्तियार करती है, तो फिर अल्लाह तआला भी उस के साथ सख़्ती का मुआमला फ़रमाता है, उसी बात को इस तरह बयान किया गया के अल्लाह तआला किसी भी क़ौम की हालत उस वक़्त तक नहीं बदलते, जब तक के वो ख़ुद अपने अंदर तब्दीली न लाए और जब कोई क़ौम अपने गुनाहों की वजह से अज़ाब की मुस्तहिक़ हो जाती है, तो फिर अल्लाह तआला के अज़ाब को कोई टाल नहीं सकता ।

اَللّٰهُ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ

● **रिज़्क का कुशादा और तंग होना अल्लाह की तरफ से होता है :** सूर-ए-रअ्द आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : अल्लाह तआला जिस के लिये चाहता है रिज़्क़ में वुस्अत कर देता है और (जिस के लिये चाहता है) तंगी कर देता है।

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ﴿۲۸﴾

● **अल्लाह का ज़िक्र दिल के इत्मीनान का हकीकी ज़रीया है :** सूर-ए-रअ्द आयत नंबर : २८ में यह ख़ुश-ख़बरी दी गई है के अल्लाह की याद से दिल को सुकून मिलता है: किसी इन्सान को दौलत व हुकूमत, इज़्ज़त व शोहरत और ऐश व इश्रत के नक़्शों से दिली सुकून हासिल नहीं हो सकता, अल्लाह तआला ने जिन लोगों को ईमान की दौलत अता फ़रमाई और वो दुन्या की चीज़ों के मुक़ाबले में अल्लाह की याद में लग गए, तो अल्लाह के ज़िक्र का नूर उन के दिलों से हर किस्म की दुन्यवी परेशानी और वहशत व घब्राहट दूर कर के हक़ीक़ी सुकून व राहत अता फ़र्मा देता है, लिहाज़ा हमें अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अल्लाह की याद में लगा कर अपने दिल को सुकून पहुंचाना चाहिये ।

وَالَّذِيۡنَ اٰتَيۡنٰهُمُ الۡكِتٰبَ يَفۡرَحُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمِنَ الۡاَحۡزَابِ مَنۡ يُّنۡكِرُ بَعۡضَهٗ ؕ قُلۡ اِنَّمَاۤ اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشۡرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيۡهِ اَدۡعُوۡا وَاِلَيۡهِ مَاٰبِ ﴿۳۶﴾

● **कुर्आन अल्लाह की सच्ची किताब है और उस के सारे मज़ामीन हक हैं :** सूर-ए-रअ्द आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (ए पैग़म्बर!) जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वो इस कलाम से ख़ुश होते हैं, जो तुम पर नाज़िल किया गया है और उन ही गिरोहों में वो भी हैं, जो उस की बाज़ बातों को मानने से इन्कार करते हैं, केह दो के मुझे तो ये हुक्म दिया गया है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ और उस के साथ किसी को ख़ुदाई में शरीक न मानूं, इसी बात की मैं दावत देता हूँ और उसी (अल्लाह) की तरफ़ मुझे लौट कर जाना है ।

وَاِذۡ تَاَذَّنَ رَبُّكُمۡ لَئِنۡ شَكَرۡتُمۡ لَاَزِيۡدَنَّكُمۡ وَلَئِنۡ كَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِىۡ لَشَدِيۡدٌ ﴿۷﴾

● **नेअ्मत के शुक्र पर मज़ीद इन्आम का वअ्दा :** सूर-ए-इब्राहीम आयत नंबर : ७ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: वो वक़्त भी (याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने ऐलान फ़र्मा दिया था के अगर तुमने वाक़ई शुक्र अदा किया, तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूंगा और अगर तुमने नाशुक्री की तो यक़ीन जानो, मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है ।

قُلۡ لِّعِبَادِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا بَيۡعٌ فِيۡهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾

● **कियामत में नेकियां काम आएंगी :** सूर-ए-इब्राहीम आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं, उन से केह दो के वो नमाज़ क़ाइम करें और हम ने उनको जो रिज़्क़ दिया है, उस में से छुप कर भी और खुल्लम खुल्ला भी (नेकी के कामों में) ख़र्च करें (और यह काम) उस दिन (क़ियामत) के आने से पेहले पेहले (कर लें) जिस में न कोई ख़रीद व फ़रोख्त होगी और न कोई दोस्ती काम आएगी ।

وَاَنۡذِرِ النَّاسَ يَوۡمَ يَاۡتِيۡهِمُ الۡعَذَابُ فَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا رَبَّنَاۤ اَخِّرۡنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيۡبٍ ۙ نُّجِبۡ دَعۡوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمۡ تَكُوۡنُوۡۤا اَقۡسَمۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ مَا لَكُمۡ مِّنۡ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾

● **कियामत के दिन दुनिया में दोबारा आकर नेक-आमाल की मोहलत नहीं दी जाएगी :** सूर-ए-इब्राहीम आयत नंबर : ४४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (ए पैग़म्बर! तुम) लोगों को उस दिन से ख़बरदार करो जब अज़ाब उन पर आन पड़ेगा, तो उस वक़्त ये ज़ालिम कहेंगे के ए हमारे परवरदिगार! हमें थोड़ी सी मुद्दत के लिये और मोहलत दे दीजिये ताके हम आपकी दावत क़ुबूल करलें और पैग़म्बरों की पैरवी करें, (यानी उनकी बताई हुई बातों पर अमल करें, उस वक़्त उन से कहा जाएगा के) अरे क्या तुम लोगों ने कस्में खा खा कर पेहले ये नहीं कहा था के तुम्हें दुन्या से कहीं जाना नहीं है (यानी तुम और तुम्हारे माल व अस्बाब कभी ख़त्म नहीं होंगे) ।

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

अल्लाह तआला बहोत बख्शने वाला भी है और उस का अज़ाब भी बडा सख्त है : सूर–ए–हिज्र आयत नंबर : ४९, ५० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मेरे बंदों को बता दो के मैं ही बहुत बख्शने वाला, बड़ा महेरबान हूँ और ये भी बता दो के मेरा अज़ाब ही दर्दनाक अज़ाब है (ताके इस बात को जान कर ईमान और तक़्वा की रग़बत और गुनाहों का ख़ौफ़ पैदा हो) ।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

● **दूसरों के माल व अस्बाब देख कर अफसोस नहीं करना चाहिये :** सूर–ए–हिज्र आयत नंबर : ८८ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: (ए रसूल!) तुम उन चीज़ों की तरफ़ हरगिज़ आँख उठा कर भी न देखो जो हम ने इन (ग़ैर ईमान वालों) में से मुख़्तलिफ़ लोगों को मज़े उड़ाने के लिये दे रखी हैं और उनकी (इस हालत) पर (कुछ) ग़म न करो और जो लोग ईमान ले आए हैं, उन के लिये अपनी शफ़क़त का बाज़ू फैला दो ।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

● **मौत तक अल्लाह तआला की इबादत में लगे रहो :** सूर–ए–हिज्र आयत नंबर : ९८, ९९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: तुम अपने परवरदिगार की हम्द के साथ उस की तस्बीह करते रहो और सज्दा करने वालों में शामिल रहो और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहो, यहां तक के तुम पर वो चीज़ (यानी मौत) आ जाए जिसका आना यक़ीनी है (यानी मरते दम तक ज़िक्र व इबादत में मशगूल रहो) ।

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾

● **अल्लाह तआला ने समंदर में भी रोज़ी के दरवाज़े खोल रखे हैं :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : १४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (अल्लाह) वही है जिस ने समंदर को काम पर लगाया ताके तुम इस से ताज़ा गोश्त खाओ और इस से वो जेवरात निकालो जो तुम पहेनते हो और तुम देखते हो के इस में कश्तियां पानी को चीरती हुई चलती हैं ताके तुम अल्लाह का फ़ज़ल (यानी रोज़ी) तलाश करो और ताके शुक्रगुज़ार बनो ।

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْــَٔرُوْنَ ﴿٥٣﴾

● **अल्लाह की इताअ्त हर हाल में लाज़िम है :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : ५२, ५३ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: आस्मानों और ज़मीन में जो कुछ है, सब उसी (अल्लाह) का है और उसी की इताअत हर हाल में लाज़िम है, क्या फिर भी तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो? और तुम को जो नेअ्मत भी हासिल होती है, वो अल्लाह की तरफ़ से होती है । फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो उसी से फ़रयाद करते हो ।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

● **अल्लाह तआला गुनाह पर फौरन पकड नहीं करता :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : ६१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अगर अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म की वजह से (फ़ौरन) अपनी पकड़ में ले लेता, तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न छोड़ता, लेकिन वो उन को एक मुतअ्य्यन वक़्त तक मोहलत दे देता है, फिर जब उनका वो मुतअ्य्यन वक़्त (यानी मौत का वक़्त) आ जाएगा, तो वो घड़ी–भर भी इस से आगे पीछे नहीं हो सकेंगे (यानी फिर उनको किसी तरह की मोहलत नहीं मिलेगी)।

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۗيِٕ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

● **अल्लाह तआला बे–हयाई, बुराई और ज़ुल्म करने से मना करता है :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : ८९, ९० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: हम ने तुम पर ये किताब उतार दी है ताके वो हर बात खोल खोल कर बयान कर दे और मुसलमानों के लिये हिदायत, रहमत और ख़ुश–ख़बरी का सामान हो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ का, एहसान का और रिश्तेदारों को (उन के हुक़ूक़) देने का हुक्म देता है और बे–हयाई, बुराई और ज़ुल्म से रोकता है, वो तुम्हें नसीहत करता है ताके तुम नसीहत क़ुबूल करो ।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۭ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ

● **दुनिया की नेअ्मतें खत्म हो जाएंगी ; लेकिन नेक–आमाल का सवाब बाकी रहेगा :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : ९६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जो कुछ तुम्हारे पास है, वो सब ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो बाक़ी रेहने वाला है ।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

● **तौबा करने वालों को अल्लाह तआला माफ कर देते हैं :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : ११९ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: फिर भी तुम्हारा रब ऐसा है के जिन लोगों ने नादानी में बुराई कर ली और उस के बाद तौबा कर ली और अपनी इस्लाह कर ली, तो इन सब बातों के बाद भी तुम्हारा परवरदिगार बहुत बख्शने वाला, बड़ा महेरबान है ।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

● **दावत व तब्लीग के आदाब :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : १२५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अपने रब के रास्ते की तरफ़ लोगों को हिक्मत के साथ और अच्छे तरीक़े से नसीहत कर के दावत दो और (अगर बहस की नौबत आए तो) उन से बहस भी ऐसे तरीक़े से करो जो बेहतरीन हो, यक़ीनन तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को भी ख़ूब जानता है जो उस के रास्ते से भटक गए हैं और उन से भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो राहे रास्त पर क़ाइम हैं ।

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾

● **बदला लेने के बजाए सब्र करना बेहतर है :** सूर–ए–नहल आयत नंबर : १२६ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: अगर तुम लोग (किसी के ज़ुल्म का) बदला लो, तो इतना ही बदला लो जितनी ज़्यादती तुम्हारे साथ की गई थी और अगर सब्र ही कर लो, तो यक़ीनन ये सब्र करने वालों के हक़ में बहुत बेहतर है ।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝٩

● **कुर्आन सीधे रास्ते की रेहनुमाई करता है :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : हक़ीक़त यह है के यह कुर्आन वो रास्ता दिखाता है, जो सब से ज़्यादा सीधा है और जो लोग (इस पर) ईमान लाकर नेक अमल करते हैं, उन्हें ख़ुश-ख़बरी देता है के उन के लिये (अल्लाह के यहां) बड़ा अज्र व सवाब है ।

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝١١

● **बुराई की दुआ नहीं करना चाहिये :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: इन्सान बुराई इस तरह मांगता है जैसे उसे भलाई मांगनी चाहिये और इन्सान बड़ा जल्दबाज़ वाक़ेअ् हुवा है ।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝١٨ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝١٩

● **दुनिया का तलबगार नाकाम और आखिरत का तलबगार काम्याब है :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : १८, १९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जो शख़्स दुन्या के फ़ौरी फ़ाइदे ही चाहता है, तो हम जिस के लिये चाहते हैं, जितना चाहते हैं, उसे यहीं पर (यानी दुन्या में) जल्दी दे देते हैं फिर उस के लिये हमने जहन्नम रख छोड़ी है जिस में वो ज़लील व ख्वार हो कर दाख़िल होगा और जो शख़्स आख़िरत (का फ़ाइदा) चाहे और उस के लिये वैसी ही कोशिश करे जैसी उस के लिये करनी चाहिये, जब के वो मोमिन भी हो, तो ऐसे लोगों की कोशिश की पूरी क़दरदानी की जाएगी (यानी उन्हें इनामात से नवाज़ा जाएगा)।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝٢٣ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝٢٤

● **वालिदैन के साथ बुढापे में भी अच्छा बरताव करो :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : २३, २४ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: तुम्हारे परवरदिगार ने ये हुक्म दिया है के उस के सिवा किसी की इबादत न करो और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर वालिदैन में से कोई एक या दोनों तुम्हारे पास बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन्हें उफ़ तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्के उन से इज़्ज़त के साथ बात किया करो और उनके साथ मुहब्बत का बरताव करते हुए उन के सामने अपने आप को आजिज़ी से झुकाओ और ये दुआ करो के ए रब! जिस तरह उन्होंने मेरे बचपन में मुझे पाला है, आप भी उन के साथ रहमत का मुआमला कीजिये ।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝٢٦ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝٢٧

● **फ़ुज़ूल खर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : २६, २७ में अल्लाह तआला का इरशाद है: रिश्तेदार को उस का हक़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को (उनका हक़) और अपने माल को बेहूदा कामों में न उड़ाओ, यक़ीन जानो के जो लोग बे-हूदा कामों में माल उड़ाते हैं, वो शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुक्रा है ।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝٢٩

● **एतिदाल के साथ खर्च करना चाहिये :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : २९ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: न तो (ऐसे कंजूस बनो के) अपने हाथ को गर्दन से बांध कर रखो और न (ऐसे फ़ुज़ूल खर्च बनो के) हाथ को बिलकुल ही खुला छोड़ दो जिस के नतीजे में तुम्हें क़ाबिले मलामत और ख़ाली हाथ हो कर बैठना पड़े ।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝٣٢

● **ज़िना तक ले जानेवाले अस्बाब से भी बचो :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ज़िना के क़रीब भी मत जाओ, वो यक़ीनी तौर पर बड़ी बे-हयाई और बहुत बुरा रास्ता है ।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٤

● **पूरी अमानतदारी के साथ यतीम के माल की हिफाज़त करो :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: यतीम के माल के पास भी मत जाओ (यानी यतीम के माल को इस्तेमाल न करो) मगर ऐसे तरीक़े से जो (उस के हक़ में) बेहतर हो, यहां तक के वो बालिग़ हो जाए (और उस के अंदर समझ पैदा हो जाए) और अह्द (जाइज़ वाअ्दा) को पूरा किया करो; बेशक (ऐसे) वाअ्दे के बारे में (तुम से) पूछताछ होने वाली है ।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٣٥

● **नाप तौल पूरा पूरा करो :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ३५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जब किसी को कोई चीज़ पैमाने से नाप कर दो, तो पूरा नापो और तौलने के लिये सही तराज़ू इस्तेमाल करो, यही तरीक़ा दुरुस्त है और इसी का अंज़ाम बेहतर है ।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝٣٦

● **कियामत में कान, आंख और दिल के बारे में सवाल होगा :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जिस बात का तुम्हें यक़ीन न हो (उसे सच समझ कर) उस के पीछे मत पड़ो, यक़ीन रखो के कान, आँख और दिल सब के बारे में (तुम से) सवाल होगा ।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝٧٨ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ

● **पांचों वक्त की नमाज़ का एहतिमाम करो :** सूर-ए-बनी इस्राईल आयत नंबर : ७८, ७९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (ए पैग़म्बर!) सूरज ढलने के वक़्त से लेकर रात के अंधेरे तक नमाज़ क़ाइम करो और फ़ज्र के वक़्त कुर्आन पढ़ने का एहतिमाम करो, याद रखो के फ़ज्र की तिलावत में (फ़रिश्तों का) मजमा हाज़िर होता है और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद पढ़ा करो जो तुम्हारे लिये एक नफ़ली इबादत है ।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾

● **आखिरत में नेक अमल की काम्याबी के लिये ईमान ज़रूरी है :** सूर-ए-कहफ़ आयत नंबर : १०५ में यह सबक़ दिया गया है के ईमान के बग़ैर कोई नेकी मक़बूल नहीं होगी: आख़िरत में किसी भी अमल के क़ुबूल होने के लिये ईमान शर्त है, कोई अमल कितना ही अच्छा क्यूं न हो, मगर ईमान न होने की वजह से अल्लाह के यहां उस की कोई हैसियत नहीं होगी और न उस पर कोई अज्र मिलेगा लिहाज़ा हमें इस अज़ीम नेअ्मते ईमान पर अल्लाह का शुक्र अदा कर के ज़्यादा नेकियों का ज़ख़ीरा करना चाहिये और अल्लाह तआला से ईमान की सलामती और ईमान पर ख़ात्मा की दुआ करनी चाहिये ।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

● **आखिरत में अल्लाह के नेक बंदों का इक्राम और नाफरमानों का अंजाम :** सूर-ए-मरयम आयत नंबर : ८५ ता ८७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (उस दिन को न भूलो) जिस दिन हम सारे मुत्तक़ी लोगों को मेहमान बना कर ख़ुदा-ए-रहमान के पास जमा करेंगे और मुजरिमों को प्यासे जानवरों की तरह हँका कर दोज़ख़ की तरफ़ ले जाऐंगे, (उस दिन) लोगों को किसी की सिफ़ारिश करने का इख्तियार भी नहीं होगा, सिवाए उन लोगों के जिन्होंने ख़ुदा-ए-रहमान से कोई इजाज़त हासिल करली हो ।

اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾

● **कियामत का इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : १५ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: यक़ीन रखो के क़ियामत की घड़ी आने वाली है, मैं उस (के वक़्त) को पोशीदा रखना चाहता हूं ताके हर शख़्स को उस के किये का बदला मिले ।

وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾

● **जादूगर को कभी काम्याबी नहीं मिलती :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : ६९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जादूगर चाहे कहीं चला जाए, उसे काम्याबी हासिल नहीं होती ।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِىْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِىْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾

● **गलत तरीके से कमाई का अंजाम तबाही व बर्बादी है :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : ८१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जो पाकीज़ा रिज़्क़ हम ने तुम्हें अता किया है, इस में से खाओ और इस में हद से आगे न बढ़ो, जिस के नतीजे में तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो जाए और जिस किसी पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो जाता है, वो तबाह हो कर रेहता है ।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

● **दुनिया सिर्फ चंद रोज़ की ज़िंदगी है :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : १०२ ता १०४ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: जिस दिन सूर फूँका जाएगा और उस दिन हम सारे मुजरिमों को घेर कर इस तरह जमा करेंगे के वो नीले पड़े होंगे (यानी इंतिहाई बदसूरत होंगे), आपस में बात चीत कर रहे होंगे के तुम (क़ब्रों में या दुन्या में) दस दिन से ज़्यादा नहीं ठहरे, जिस (दुन्या की ज़िंदगी के) बारे में वो बातें करेंगे, उस की हक़ीक़त हमें ख़ूब मालूम है, जबके उन में सब से ज़्यादा सही राय रखने वाला कहेगा के तुम एक दिन से ज़्यादा नहीं ठहरे ।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِىَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَىِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

● **कियामत का हाल :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : १०५ ता ११२ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: लोग तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (के क़ियामत में उनका क्या हाल होगा?) जवाब में केह दो के मेरा परवरदिगार (ऐसी क़ुदरत रखता है के) उनको धूल की तरह उड़ा देगा और ज़मीन को ऐसा हमवार चटियल मैदान बना कर छोड़ेगा के उस में तुम्हें न कोई नाहमवारी नज़र आएगी और न कोई बुलंदी, उस दिन सब के सब एक आवाज़ देने वाले के पीछे इस तरह चले आएँगे के उस के सामने (किसी का) कोई टेढ़ापन न रहेगा (जैसे दुन्या में उल्टी सीधी बातें करते थे, अब वो ऐसी बातें नहीं कर सकेंगे) और ख़ुदा-ए-रहमान के आगे तमाम आवाज़ें दब कर रेह जाएँगी चुनांचे तुम्हें पांव की सरसराहाट (यानी पांव चलने की आवाज़) के सिवा कुछ सुनाई नहीं देगा, उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम नहीं आएगी, सिवाए उस शख़्स (की सिफ़ारिश) के जिसे ख़ुदा-ए-रहमान ने इजाज़त दे दी हो और जिस के बोलने पर वो राज़ी हो, वो अल्लाह लोगों की सारी अगली पिछली बातों को जानता है और वो लोग अल्लाह के इल्म का इहाता नहीं कर सकते (यानी अल्लाह तआला को कितना इल्म है? वो उन्हें कभी मालूम नहीं हो सकता) और (उस दिन) सारे के सारे चेहरे हमेशा ज़िंदा और बाक़ी रेहने वाले अल्लाह के आगे झुके हुए होंगे और जो कोई ज़ुल्म का बोझ उठा कर लाएगा, वो नाकाम होगा और जिसने नेक अमल किये होंगे, जब के वो मोमिन भी हो, तो उसे न किसी ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा और न किसी हक़ तलफ़ी का (यानी ऐसा शख़्स कामयाब हो जाएगा) ।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

● **कुर्आनी अहकामात पर अमल न करने की वजह से रोज़ी में तंगी और आखिरत में अज़ाब होगा :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : १२४ ता १२६ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: जो शख़्स मेरी नसीहत से मुँह मोड़ेगा, तो उस को बड़ी तंग ज़िंदगी मिलेगी और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा कर के उठाएँगे, वो कहेगा के या-रब! तूने मुझे अंधा कर के क्यों उठाया, हालांके मैं तो आँखों वाला था? अल्लाह कहेगा : इसी तरह हमारी आयतें तेरे पास आई थीं, मगर तूने उन्हें भुला दिया और आज इसी तरह तुझे भुला दिया जाएगा।

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۭ

● **नमाज़ की पाबंदी करने के साथ साथ घर वालों को भी नमाज़ का हुक्म करो :** सूर-ए-ताहा आयत नंबर : १३२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और ख़ुद भी इस के पाबंद रहो ।

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

● **शरीअ्त का हुक्म मालूम न होने पर किसी जानकार आलिम से मालूम करो :** सूर-ए-अंबिया आयत नंबर : ७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अगर तुम्हें ख़ुद इल्म नहीं है, तो नसीहत का इल्म रखने वालों से पूछ लो ।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

● **कियामत के दिन किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा :** सूर-ए-अंबिया आयत नंबर : ४७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: हम क़ियामत के दिन ऐसी तराज़ूएं ला रखेंगे जो सरापा इन्साफ़ होंगी, चुनांचे किसी पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा, तो हम उसे (क़ियामत के दिन सब के) सामने ले आएँगे और हिसाब लेने के लिये हम काफ़ी हैं ।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝

● **तमाम इन्सानों का रब एक अल्लाह है :** सूर-ए-अंबिया आयत नंबर : ९२, ९३ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: (लोगो!) यक़ीन रखो के यह (दीन जिस की ये तमाम अंबिया दावत देते रहे हैं) तुम्हारा दीन है जो एक ही दीन है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, लिहाज़ा तुम मेरी इबादत करो और लोगों ने अपने दीन को आपस में टुकड़े टुकड़े कर के बांट लिया, (मगर) सब हमारे पास (मौत के बाद) लौट कर आने वाले हैं ।

يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝

● **कियामत का आना; अल्लाह का सच्चा वअ्दा है :** सूर-ए-अंबिया आयत नंबर : १०४ में अल्लाह तआला का इरशाद है : उस दिन (का ध्यान रखो) जब हम आस्मान को इस तरह लपेट देंगे, जिस तरह लिखे हुए मज़ामीन का कागज़ लपेट दिया जाता है (और) हमने जिस तरह पेहली बार पैदा किया (इसी तरह आसानी से) इस को दोबारा पैदा कर देंगे, ये हमारे ज़िम्मे एक वाअ्दा है और हम ज़रूर उस को पूरा करेंगे ।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝

● **कियामत का ज़लज़ला बडा खौफनाक होगा :** सूर-ए-हज आयत नंबर : १,२ में अल्लाह तआला क़ियामत की होलनाकी बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ए लोगो! अपने परवरदिगार (के ग़ज़ब) से डरो, यक़ीन जानो के क़ियामत (के दिन) का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी, जिस दिन तुम इस ज़लज़ले को देखोगे, उस दिन हर दूध पिलाने वाली उस बच्चे (तक) को भूल जाएगी जिसको उसने दूध पिलाया, और हर हमल वाली (उस दिन के ख़ौफ़ से) अपना हमल गिरा देगी और लोग तुम्हें यूं नज़र आएँगे के वो नशे में बदहवास हैं, हालांके वो नशे में नहीं होंगे, बल्के अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त होगा (इस लिये ऐसे सख़्त दिन से बचने के लिये नेक आमाल कर के पेहले से तैयारी कर लो)।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝

● **अच्छे काम करने वाले मोमिन बंदों के साथ अल्लाह का वअ्दा :** सूर-ए-हज आयत नंबर : १४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक अमल किये हैं, अल्लाह तआला यक़ीनन उन को ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बेहती होंगी, यक़ीनन अल्लाह हर वो काम करता है, जिस का इरादा कर लेता है (कोई उसे रोक नहीं सकता)।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝

● **अल्लाह के रास्ते में जान व माल खर्च करने वालों के लिये बेहतरीन बदला :** सूर-ए-हज आयत नंबर : ५८, ५९ में यह बताया गया है के अल्लाह की राह में जान व माल ख़र्च करने वालों के लिये बेहतरीन बदले और जन्नत का वाअदा है: जो लोग दीन की हिफ़ाज़त व सरबुलंदी के लिये अपना घर-बार छोड़ कर दीन की मेहनत और अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने के लिये निकलते हैं और अपना जान और माल लगाते हैं, आख़िरत में अल्लाह तआला उन्हें उनकी रजामंदी के मुताबिक़ बेहतरीन बदला और जन्नत में दाख़िला अता फ़रमाएगा, इस लिये ईमान वालों को अल्लाह की राह में जान व माल ख़र्च करने से पीछे नहीं हटना चाहिये ।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

● **अल्लाह ने काइनात की सारी चीज़ों को इन्सानों के काम में लगा रखा है :** सूर-ए-हज आयत नंबर : ६५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : क्या तुम ने नहीं देखा के अल्लाह ने ज़मीन की सारी चीज़ें तुम्हारे काम में लगा रखी हैं और वो कश्तियां भी जो उस के हुक्म से समंदर में चलती हैं और उसने आस्मान को इस तरह थाम रखा है के वो उस की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकता, हक़ीक़त यह है के (यह सब चीज़ अल्लाह ने तुम्हारी ज़रूरत के लिये बना रखी है, इस लिये के) अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त का बरताव करने वाला, बड़ा मेहेरबान है ।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝

● **अल्लाह के अलावा जिनकी इबादत की जाती हैं, वो सब कमज़ोर व बेबस हैं :** सूर-ए-हज आयत नंबर : ७३ में अल्लाह तआला का इरशाद है : लोगो! एक मिसाल बयान की जा रही है, अब उसे कान लगा कर सुनो! तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन जिन को दुआ के लिये पुकारते हो, वो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे इस काम के लिये सब के सब इकट्ठे हो जाएं और अगर मक्खी उन से कोई चीज़ छीन कर ले जाए, तो वो उस से छुड़ा भी नहीं सकते, ऐसा दुआ मांगने वाला भी कमज़ोर और जिस से दुआ मांगी जा रही है वो भी (कमज़ोर और बेबस है) ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ (१)

● **काम्याबी हासिल करने के लिये भले काम करो :** सूर-ए-हज आयत नंबर : ७७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! रुकू करो और सज्दा करो और अपने परवरदिगार की बंदगी करो और भलाई के काम करो ताके तुम्हें काम्याबी हासिल हो ।

(१) **नोट:** यहां इमाम शाफ़ई ﷺ के नज़दीक सज्दा है

يَآيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۖ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

● **हलाल रिज़्क खाओ और नेक अमल करो :** सूर–ए–मोमिनून आयत नंबर : ५१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए पैग़म्बरो! पाकीज़ा चीज़ों में से (जो चाहो) खाओ और नेक अमल करो यक़ीन रखो के जो कुछ तुम करते हो, मुझे उस का पूरा पूरा इल्म है।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ۚ

● **बुराई का जवाब अच्छाई से देना चाहिये :** सूर–ए–मोमिनून आयत नंबर : ९६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: तुम बुराई को ऐसे तरीक़े से दूर करते रहो, जो (तरीक़ा) बहुत ही अच्छा हो ।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

● **कियामत के दिन रिश्ते नाते काम नहीं आएंगे :** सूर–ए–मोमिनून आयत नंबर : १०१ ता १०३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : फिर जब सूर फूँका जाएगा, तो उस दिन न उनके दरमियान रिश्ते नाते बाक़ी रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा, उस वक़्त जिनके (आमाल के) पलड़े भारी निकले, तो वही होंगे जो काम्याबी पाएँगे और जिनके (आमाल के) पलड़े हल्के पड़ गए, तो ये वो लोग होंगे, जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाल रखा था (और) वो दोज़ख़ में हमेशा हमेश रहेंगे ।

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾

● **गैर ईमान वाले कियामत के दिन अफसोस करेंगे :** सूर–ए–मोमिनून आयत नंबर : १०६ ता १०८ में अल्लाह तआला का फ़रमान है: वो (ग़ैर ईमान वाले) कहेंगे : हमारे परवरदिगार! (दुन्या में) हम पर हमारी बदबख्ती छा गई थी और हम गुमराह लोग थे, हमारे परवरदिगार! हमें यहां (दोज़ख़) से बाहर निकाल दीजिये, फिर अगर हम दोबारा वही काम करें, तो बेशक हम ज़ालिम होंगे, अल्लाह फ़रमाएगा: इसी (दोज़ख़) में ज़लील हो कर पड़े रहो और मुझ से बात भी न करो ।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

● **ईमान वालों में बुराई आम करनेवालों का अंजाम :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला का फ़रमान है: याद रखो के जो लोग यह चाहते हैं के ईमान वालों में बे–हयाई फैले, उन के लिये दुन्या और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ
يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

● **बेहयाई और बुराई की तरगीब देना शैतान का काम है :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : २१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! तुम शैतान के पीछे पीछे मत चलो और अगर कोई शख़्स शैतान के पीछे चलता है, तो (सुन लो!) शैतान (का काम) तो हमेशा बे–हयाई और बुराई का हुक्म करना ही है और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती, तो तुम में से कोई भी कभी पाक न होता, लेकिन अल्लाह जिस को चाहता है, पाक साफ़ कर देता है और अल्लाह हर बात सुनता, हर चीज़ जानता है ।

وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۭ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾

● **माफ करने वाले को अल्लाह भी माफ कर देता है :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : २२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: तुम में से जो लोग एहले ख़ैर हैं और माली वुस्अत रखते हैं, वो ऐसी कस्में न खाएं के वो रिश्तेदारों, मिस्कीनों और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को कुछ नहीं देंगे और उन्हें चाहिये के माफ़ी और दर–गुज़र से काम लें, क्या तुम्हें यह पसंद नहीं है के अल्लाह तुम्हारी ख़ताएँ बख्श दे? और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बड़ा महेरबान है ।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

● **तोहमत लगाने वालों का अंजाम :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : २३, २४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : याद रखो के जो लोग पाक दामन भोली–भाली मुसलमान औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुन्या और आख़िरत में फिटकार पड़ चुकी है और उन को उस दिन ज़बरदस्त अज़ाब होगा, जिस दिन ख़ुद उन की ज़बानें, उन के हाथ और उन के पांव; उन के ख़िलाफ़ उन के किये हुए कामों की गवाही देंगे, जो वो (दुन्या में) करते रहे हैं ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓي اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ
وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾

● **किसी के घर जाने से पेहले इजाज़त लेना चाहिये :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : २७, २८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में उस वक़्त तक दाख़िल न हो जब तक इजाज़त न ले लो और उन में बसने वालों को सलाम न कर लो, यही तरीक़ा तुम्हारे लिये बेहतर है, उम्मीद है के तुम (इस नसीहत का) खयाल रखोगे और अगर तुम उन घरों में किसी को न पाओ तब भी उन में उस वक़्त तक दाख़िल न हो, जब तक तुम्हें इजाज़त न दे दी जाए और अगर तुम से (घर के अंदर से) कहा जाए के वापस चले जाओ, तो वापस चले जाओ, यही तुम्हारे लिये पाकीज़ा तरीन तरीक़ा है और तुम जो अमल भी करते हो अल्लाह को उस का पूरा पूरा इल्म है ।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

● **अपनी नज़रों और शर्मगाहों की हिफाज़त करो :** सूर–ए–नूर आयत नंबर : ३० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मोमिन मर्दों से केह दो के वो अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यही उन के लिये पाकीज़ा तरीन तरीक़ा है, वो जो काम करते हैं, अल्लाह इन सब से पूरी तरह बाख़बर है ।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾

● **बुरे से दोस्ती का अंजाम :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : २७ ता २९ में अल्लाह तआला का फ़रमान है: (वो दिन ऐसा होगा) जिस दिन ज़ालिम (हस्रत से) अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा: क्या अच्छा होता के मैं रसूल के साथ दीन के रास्ते पर लग लेता! हाय मेरी बर्बादी! काश मैंने फ़ुलां शख़्स को दोस्त न बनाया होता! मेरे पास नसीहत आ चुकी थी, मगर इस (दोस्त) ने मुझे इस से भटका दिया और शैतान तो है ही ऐसा के वक़्त पड़ने पर इन्सान को बे यारो मददगार छोड़ जाता है ।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

● **अल्लाह की कुद्रत :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : ४७ ता ४९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिये रात को लिबास बनाया और नींद को सरापा सुकून और दिन को दोबारा (नींद से) उठ खड़े होने का ज़रीया बना दिया और वही अल्लाह है जिसने अपनी रहमत (यानी बारिश) से पेहले हवाएं भेजीं जो (बारिश की) ख़ुश ख़बरी लेकर आती हैं और (अल्लाह फ़रमाते हैं) हमने ही आस्मान से पाकीज़ा पानी उतारा है ताके हम उस के ज़रीये मुर्दा ज़मीन को ज़िंदगी बख़्शें और अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से जानवरों और इन्सानों को इस से सेराब करें ।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

● **नसबी और ससुराली रिश्ते अल्लाह तआला बनाता है :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : ५४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: वही (अल्लाह) है जिस ने पानी से इन्सान को पैदा किया, फिर उस को नसबी और ससुराली रिश्ते अता किये हैं और तुम्हारा परवरदिगार बड़ी क़ुदरत वाला है ।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٨﴾

● **हमेशा ज़िंदा रेहने वाले अल्लाह पर भरोसा रखो :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : ५८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: तुम उस (अल्लाह की) ज़ात पर भरोसा रखो जो ज़िंदा है, जिसे कभी मौत नहीं आएगी और उसी की हम्द के साथ तस्बीह करते रहो और वो अपने बंदों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिये काफ़ी है ।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

● **रात व दिन का एक दूसरे के पीछे आना अल्लाह की निशानी है :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : ६२ में अल्लाह तआला ये ख़बर देते हैं : वही (अल्लाह) है जिस ने रात और दिन को ऐसा बनाया के वो एक दूसरे के पीछे चले आते हैं, (मगर यह अल्लाह की क़ुदरत की सारी बातें) उस शख़्स के लिये (काम की हैं) जो (इन चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र कर के) नसीहत हासिल करने का इरादा रखता हो या शुक्र अदा करना चाहता हो ।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

● **अल्लाह के खास बंदों की निशानियां :** सूर-ए-फ़ुर्क़ान आयत नंबर : ६३ ता ६९ में अल्लाह तआला यह तज़किरा फ़रमाते हैं: रहमान के बंदे वो हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से जाहिलाना ख़िताब करते हैं, तो वो सलामती की बात केहते हैं और जो रातें इस तरह गुज़ारते हैं के अपने परवरदिगार के आगे (कभी) सज्दे में होते हैं और (कभी) क़ियाम में और जो यह केहते हैं के ए हमारे परवरदिगार! जहन्नम के अज़ाब को हम से दूर रखिये, हक़ीक़त यह है के इस का अज़ाब पूरी तबाही है, बेशक वो जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है और जो ख़र्च करते हैं, तो न फ़ुज़ूल खर्ची करते हैं, न तंगी करते हैं, बल्के उन का ख़र्च करना इस (कमी ज़्यादती) के दरमियान एतिदाल का तरीक़ा है और जो अल्लाह के साथ किसी भी दूसरे माबूद की इबादत नहीं करते और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत बख़्शी है, उसे नाहक़ क़तल नहीं करते और न वो ज़िना करते हैं और जो शख़्स भी ये काम करेगा, उसे अपने गुनाह के वबाल का सामना करना पड़ेगा, क़ियामत के दिन उस का अज़ाब बढ़ा बढ़ा कर दुगना कर दिया जाएगा और वो ज़लील हो कर उस अज़ाब में हमेशा हमेशा रहेगा ।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾

● **हक पर रेहते हुए अल्लाह तआला की मदद ज़रूर आती है :** सूर-ए-शुअ्रा आयत नंबर : ५२ ता ६७ में यह ख़ुशख़बरी दी गई है के हर तकलीफ़ के बाद राहत आती है : हज़रत मूसा عليه السلام की क़ौम ने फ़िरऔन के ज़ुल्म को बर्दाश्त किया और ईमान पर जमे रहे तो अल्लाह तआला ने उन्हें बहुत से इनामात से नवाज़ा, उन के लिये दरिया में रास्ते बना दिये, उन के दुश्मन फ़िरऔन को इसी दरिया में डुबो दिया और फिर उन को इसी मुल्क में बादशाहत अता फ़रमा दी, जब इन्सान दीन के लिये तकलीफ़ उठाता है और इस्लामी अहकाम पर अमल करता है, तो अल्लाह तआला उस को अपनी ज़मीन का वारिस व मालिक बना देता है, लिहाज़ा दीन की मेहनत करने में आने वाली रुकावटों से घबराना नहीं चाहिये और अल्लाह से मदद की उम्मीद रखनी चाहिये ।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

● **कियामत का मंज़र :** सूर–ए–नम्ल आयत नंबर : ८७, ८८ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : जिस दिन सूर फूँका जाएगा, तो आस्मानों और ज़मीनों के सब रेहने वाले घबरा उठेंगे, सिवाए उन के जिन्हें अल्लाह चाहेगा और सब उस के पास झुके हुए हाज़िर होंगे, तुम पहाड़ों को देखते हो तो समझते हो के यह अपनी जगह जमे हुए हैं, हालांके वो इस तरह फिर रहे होंगे जैसे बादल फिरते हैं, यह सब अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज़ को मज़बूत तरीक़े से बनाया है, यक़ीनन उसे पूरी ख़बर है के तुम काम करते हो ।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾

● **नेकी पर इनाम और बुराई पर सज़ा :** सूर–ए–नम्ल आयत नंबर : ८९, ९० में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जो कोई नेकी लेकर आएगा उसे उस से बेहतर बदला मिलेगा और ऐसे लोग उस दिन हर किस्म की घब्राहट से महफ़ूज़ होंगे और जो कोई बुराई लेकर आएगा, तो ऐसे लोगों को मुँह के बल आग में डाल दिया जाएगा तुम्हें किसी और बात की नहीं, उन्ही आमाल की सज़ा दी जाएगी जो तुम किया करते थे।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۹۲﴾

● **दाई का काम सीधी राह दिखाना है :** सूर–ए–नम्ल आयत नंबर : ९१, ९२ में अल्लाह तआला का इरशाद है: (ए पैग़म्बर! उन से केह दो के) मुझे तो यही हुक्म मिला है के मैं इस शहर के रब की इबादत करूँ जिसने इस शहर को हुर्मत बख्शी है और हर चीज़ का मालिक वही है और मुझे यह हुक्म मिला है के मैं फ़रमांबरदारों में शामिल रहूं और यह के मैं क़ुर्आन की तिलावत करूँ, अब जो शख्स हिदायत के रास्ते पर आए, वो अपने ही फ़ाइदे के लिये रास्ते पर आएगा और जो गुमराही इख्तियार करे, तो केह देना के मैं तो बस उन लोगों में से हूँ जो ख़बरदार करते हैं ।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۰﴾

● **दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत बहोत मामूली चीज़ है :** सूर–ए–क़सस आयत नंबर : ६० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : तुम को जो कुछ भी दिया गया है, वो दुन्यवी ज़िंदगी का ख़ज़ाना और इस की ख़ूबसूरती है और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो कहीं ज़्यादा बेहतर और कहीं ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है, क्या फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿۶۷﴾

● **तौबा कर के ईमान लाने और अच्छे काम करनेवाले ज़रूर काम्याब होंगे :** सूर–ए–क़सस आयत नंबरन : ६७ में अल्लाह फ़रमाते हैं : यक़ीनन जिन लोगों ने तौबा कर ली और ईमान ले आए और नेक अमल किये, तो पूरी उम्मीद है के वो उन लोगों में शामिल होंगे जिन्हें काम्याबी हासिल होगी ।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۷۰﴾

● **दुनिया व आखिरत में सारी तारीफ के लाइक अल्लाह ही है :** सूर–ए–क़सस आयत नंबर : ७० में अल्लाह का फ़रमान है : अल्लाह वही है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तारीफ़ उसी की है दुन्या में भी और आख़िरत में भी और हुक्म उसी का चलता है और उसी की तरफ़ तुम सब वापस भेजे जाओगे ।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۱﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾

● **रात दिन का आना जाना अल्लाह की बडी नेअ्मत है :** सूर–ए–क़सस आयत नंबर : ७१ ता ७३ में अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं : (ए पैग़म्बर! उन से) कहो : ज़रा यह बतलाओ के अगर अल्लाह तुम पर रात को हमेशा के लिये क़ियामत के दिन तक बाक़ी रखे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (ऐसा) है जो तुम्हारे पास रोशनी लेकर आए? भला क्या तुम सुनते नहीं हो? कहो : ज़रा यह बतलाओ के अगर अल्लाह तुम पर दिन को हमेशा के लिये क़ियामत के दिन तक बाक़ी रखे, तो अल्लाह के अलावा कौन माबूद है, जो तुम्हें वो रात ला कर दे दे, जिस में तुम सुकून हासिल कर सको? भला क्या तुम्हें समझ में नहीं आता, उसी ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात भी बनाई है और दिन भी ताके तुम रात में आराम करो और दिन में रोज़ी तलाश करो और (यह सारी चीज़ें इस लिये दी हैं) ताके तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो ।

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۷۷﴾

● **अल्लाह तआला फसाद करने वालों को पसंद नहीं करता :** सूर–ए–क़सस आयत नंबर : ७७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अल्लाह ने तुम्हें जो कुछ दे रखा है, उस के ज़रीये आख़िरत वाला घर बनाने की कोशिश करो और दुन्या में से अपने हिस्से को (आख़िरत में ले जाने के लिये) मत भूलो और अल्लाह ने जिस तरह तुम पर एहसान किया है, तुम भी एहसान करो और ज़मीन में फ़साद मचाने की कोशिश न करो, यक़ीन जानो अल्लाह फ़साद मचाने वालों को पसंद नहीं करता ।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۸۳﴾

● **आखिरत में अच्छा अंजाम परहेज़गारों का है :** सूर–ए–क़सस आयत नंबर : ८३ में अल्लाह तआला का पैग़ाम है : वो आख़िरत वाला घर तो हम उन लोगों के लिये ख़ास कर देंगे, जो ज़मीन में न तो बुराई चाहते हैं और न फ़साद और आख़री अंजाम (यानी अच्छा फ़ैसला) परहेज़गारों के हक़ में होगा ।

اَوَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ كَانُوۡۤا اَشَدَّ مِنۡهُمۡ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الۡاَرۡضَ وَعَمَرُوۡهَاۤ اَكۡثَرَ مِمَّا عَمَرُوۡهَا وَجَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ۝٩

● **पिछली उम्मतों से इब्रत हासिल करो :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं ताके वो यह देखते के उन से पेहले जो लोग थे, उन का अंजाम कैसा हुवा? वो ताक़त में उन से ज़्यादा मज़बूत थे और उन्होंने ज़मीन को भी जोता था और जितना इन लोगों ने इसे आबाद किया, इस से ज़्यादा उन्होंने इस को आबाद किया था और उन के पास उन के पैग़म्बर खुले खुले दलाइल लेकर आए थे, चुनांचे अल्लाह तो ऐसा नहीं था के उन पर ज़ुल्म करे, लेकिन वो ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे ।

وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ يَوۡمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوۡنَ ۝١٤ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمۡ فِىۡ رَوۡضَةٍ يُّحۡبَرُوۡنَ ۝١٥ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الۡاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِى الۡعَذَابِ مُحۡضَرُوۡنَ ۝١٦

● **कियामत के दिन मोमिन खुशहाल और मुज्रिमीन बदहाल होंगे :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : १४ ता १६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमातों में बट जाऐंगे, चुनांचे जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने नेक अमल किये थे, उन को तो जन्नत में ऐसी ख़ुशियां दी जाएंगी, जो उनके चेहरों से फूट पड़ रही होंगी और जिन लोगों ने कुफ़्र अपना लिया था और हमारी आयतों को और आख़िरत का सामना करने को झुटलाया था, तो ऐसे लोगों को अज़ाब में गिरफ़्तार किया जाएगा ।

فَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ حِيۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِيۡنَ تُصۡبِحُوۡنَ ۝١٧ وَلَهُ الۡحَمۡدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَعَشِيًّا وَّحِيۡنَ تُظۡهِرُوۡنَ ۝١٨

● **सुबह व शाम और दोपहर में अल्लाह की तस्बीह करो :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : १७,१८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : लिहाज़ा अल्लाह की तस्बीह करो उस वक़्त भी, जब तुम्हारे पास शाम आती है और उस वक़्त भी जब तुम पर सुबह तुलूअ होती है और उसी की हम्द होती है आस्मानों में भी और ज़मीन में भी और सूरज ढलने के वक़्त भी और उस वक़्त भी जब तुम पर ज़ुहर का वक़्त आता है ।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوۡا رَبَّهُمۡ مُّنِيۡبِيۡنَ اِلَيۡهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمۡ مِّنۡهُ رَحۡمَةً اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ بِرَبِّهِمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ۝٣٣ لِيَكۡفُرُوۡا بِمَاۤ اٰتَيۡنٰهُمۡ ؕ فَتَمَتَّعُوۡا ۟ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٣٤

● **मुसीबत के बाद राहत मिलने पर अल्लाह तआला को मत भूल जाओ :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : ३३,३४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो वो अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जे हो कर उसी को पुकारते हैं, फिर जब वो अपनी तरफ़ से उन्हें किसी रहमत का मज़ा चखा देता है, तो उन में से कुछ लोग अचानक अपने परवरदिगार के साथ शिर्क करने लगते हैं ताके हमने उन्हें जो कुछ दिया था, उस की नाशुक्री करें, अच्छा! कुछ मज़े अड़ालो, फिर वो वक़्त दूर नहीं जब तुम्हें सब पता चल जाएगा ।

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ۝٣٧ فَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَالۡمِسۡكِيۡنَ وَابۡنَ السَّبِيۡلِ ؕ ذٰلِكَ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ يُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۝٣٨

● **रिश्तेदार, मिस्कीन और मुसाफिरों पर खर्च करना बडी भलाई है :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : ३७,३८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : क्या इन्होंने यह नहीं देखा के अल्लाह जिस के लिये चाहता है, रिज़्क़ कुशादा कर देता है और तंग कर देता है, इस में यक़ीनन उन लोगों के लिये बड़ी निशानियां हैं जो ईमान लाएंगे, लिहाज़ा तुम रिश्तेदार को उन का हक़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को भी, जो लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहते हैं, उन के लिये यह बेहतर है और वही काम्याबी पाने वाले हैं ।

وَمَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ رِّبًا لِّيَرۡبُوَا۟ فِىۡۤ اَمۡوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرۡبُوۡا عِنۡدَ اللّٰهِ ۚ وَمَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ زَكٰوةٍ تُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُضۡعِفُوۡنَ ۝٣٩

● **सूद से माल घटता है और ज़कात से माल बढता है :** सूर–ए–रुम आयत नंबर : ३९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यह जो तुम सूद देते हो ताके वो लोगों के माल में शामिल हो कर बढ़ जाए, तो वो अल्लाह के नज़दीक बढ़ता नहीं है और जो ज़कात तुम अल्लाह को ख़ुश करने के इरादे से देते हो, तो उनही लोगों को कई गुना बढ़ा कर दिया जाएगा (यानी सूद लेने और देने से आख़िर कार माल में ज़रूर कमी आएगी और ज़कात देने से माल में ख़ूब बरकत होगी)।

وَلَوۡ اَنَّمَا فِى الۡاَرۡضِ مِنۡ شَجَرَةٍ اَقۡلَامٌ وَّالۡبَحۡرُ يَمُدُّهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ سَبۡعَةُ اَبۡحُرٍ مَّا نَفِدَتۡ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝٢٧

● **अल्लाह तआला की बडाई हमेशा बाकी रहेगी :** सूर–ए–लुक़्मान आयत नंबर : २७ में अल्लाह तआला का इरशाद है : ज़मीन में जितने दरख़्त हैं, अगर वो क़लम बन जाएं और ये जो समंदर है, इस के अलावा सात समंदर उस के साथ और मिल जाएं (और वो रोशनाई बन कर अल्लाह की बढ़ाई लिखें) तब भी अल्लाह की बातें (और अल्लाह की तारीफ़) ख़त्म नहीं होंगी, हक़ीक़त ये है के अल्लाह हुकूमत का भी मालिक है और हिक्मत का भी मालिक है ।

اِنَّ اللّٰهَ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الۡغَيۡثَ ۚ وَيَعۡلَمُ مَا فِى الۡاَرۡحَامِ ؕ وَمَا تَدۡرِىۡ نَفۡسٌ مَّاذَا تَكۡسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدۡرِىۡ نَفۡسٌۢ بِاَىِّ اَرۡضٍ تَمُوۡتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ خَبِيۡرٌ ۝٣٤

● **पांच चीज़ों का यकीनी इल्म सिर्फ अल्लाह तआला ही को है :** सूर–ए–लुक़्मान आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यक़ीनन (क़ियामत आने के) वक़्त का इल्म अल्लाह ही के पास है, वही बारिश बरसाता है और वही जानता है के माओं के पेट में क्या है और किसी शख़्स को यह पता नहीं के वो कल क्या कमाएगा और न किसी शख़्स को यह पता है के कौन सी ज़मीन में उसे मौत आएगी, बेशक अल्लाह हर चीज़ का मुकम्मल इल्म रखने वाला, हर बात से पूरी तरह बाख़बर है ।

اِنَّمَا يُؤۡمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيۡنَ اِذَا ذُكِّرُوۡا بِهَا خَرُّوۡا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوۡا بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ۝١٥ ۩ تَتَجَافٰى جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ يَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ خَوۡفًا وَّطَمَعًا ۖ وَّمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۝١٦

● **मोमिन बंदे रातों को जाग कर नमाज़, दुआ और इबादत में मशगूल रेहते हैं :** सूर–ए–सज्दा आयत नंबर : १५,१६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : हमारी आयतों पर तो वो लोग ईमान लाते हैं, जिन का हाल यह है के जब उन्हें आयतों के ज़रीये नसीहत की जाती है, तो वो सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह करते हैं और वो तकब्बुर नहीं करते, उनके पेहलू (रात के वक़्त) अपने बिस्तरों से जुदा होते हैं, वो अपने परवरदिगार को डर और उम्मीद के साथ पुकार रहे होते हैं और हमने उनको जो रिज़्क़ दिया है, वो इस में से (नेकी के कामों में) ख़र्च करते हैं।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

● **औरतें बिला मजबूरी और उज़्र के घर से बाहर न निकलें :** सूर–ए–अहज़ाब आयत नंबर : ३३ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : (ए औरतों!) तुम अपने घरों में क़रार के साथ रहो (यानी घरों के अंदर ही रहो) और (ग़ैर मर्दों को अपना) बनाओ सिंघार दिखाती न फिरो, जैसा के पेहली जाहिलियत में (यानी नबी ﷺ को नबी बनाए जाने से पेहले के ज़माने में) दिखाया जाता था और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करो ।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾

● **अल्लाह व रसूल के हुक्म की ना–फरमानी करना खुली गुम्राही है :** सूर–ए–अहज़ाब आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जब अल्लाह और उस का रसूल किसी काम का हुक्म दे दें, तो किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को अपने मुआमले (का फ़ैसला करने) में कोई इख्तियार बाक़ी नहीं है और जिस किसी ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की, वो खुली गुमराही में पड़ गया।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿۴۱﴾ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾

● **अल्लाह का ज़िक्र सुबह व शाम कस्रत से करो :** सूर–ए–अहज़ाब आयत नंबर : ४१ ता ४४ में अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! अल्लाह को ख़ूब कस्रत से याद करो और सुबह व शाम उस की तस्बीह करो, वही है जो ख़ुद भी तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते भी ताके वो तुम्हें (जहालत की) अंधेरों से निकाल कर (इल्म की) रोशनी में ले आए और वो मोमिनों पर बहुत महेरबान है, जिस दिन मोमिन लोग अल्लाह से (जन्नत में) मिलेंगे, उस दिन उनका इस्तिक़बाल सलाम से होगा और अल्लाह ने उनके लिये बाइज़्ज़त इनाम तैयार कर रखा है ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿۶۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

● **सच्ची बात केहने से आमाल अच्छे और गुनाह माफ होंगे :** सूर–ए–अहज़ाब आयत नंबर : ६९ ता ७१ में अल्लाह तआला नसीहत फ़रमाता है: ए ईमान वालो! उन लोगों की तरह न बन जाना, जिन्होंने मूसा (علیہ السلام) को सताया था, फिर अल्लाह ने उनको इन बातों से बरी कर दिया, जो उन लोगों ने (मूसा علیہ السلام के बारे में) कही थीं और वो अल्लाह के नज़दीक बड़े रुत्बे वाले थे, ए ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी सच्ची बात कहा करो, अल्लाह तुम्हारे फ़ाइदे के लिये तुम्हारे काम सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करे, उसने वो काम्याबी हासिल करली जो ज़बरदस्त काम्याबी है।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰۤى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۪ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾

● **नेक काम करने वाले मोमिन बंदों के लिये जन्नत के बालाखानों में घर :** सूर–ए–सबा आयत नंबर : ३६,३७ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : (ए पैग़म्बर!) केह दो के मेरा परवरदिगार जिस के लिये चाहता है, रिज़्क़ की ज़्यादती कर देता है और (जिस के लिये चाहता है) तंगी कर देता है लेकिन अक्सर लोग इस बात को समझते नहीं हैं और न तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह से क़रीब करते हैं न तुम्हारी औलाद, हाँ! मगर जो ईमान लाए और नेक अमल करे, तो ऐसे लोगों को उन के अमल का दोहरा सवाब मिलेगा और वो (जन्नत के) बालाख़ानों में चैन से रहेंगे ।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۶﴾

● **शैतान इन्सान का दुश्मन है :** सूर–ए–फ़ातिर आयत नंबर : ५,६ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : ए लोगो! यक़ीन जानो के अल्लाह का वाअ्दा सच्चा है, लिहाज़ा तुम्हें यह दुन्यवी ज़िंदगी हरगिज़ धोके में न डाले और न अल्लाह के मुआमले मैं तुम्हें वो (शैतान) धोके में डालने पाए जो बड़ा धोकेबाज़ है, यक़ीन जानो के शैतान तुम्हारा दुश्मन है, इस लिये उस को दुश्मन ही समझते रहो, वो तो अपने मानने वालों को जो दावत देता है, वो इस लिये देता है ताके वो लोग जहन्नमियों में से हो जाएं।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾

● **अल्लाह गनी है और तमाम मख्लूक उस की मोहताज है :** सूर–ए–फ़ातिर आयत नंबर : १५ ता १७ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए लोगो! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह बेनियाज़ और हर तारीफ़ का मुस्तहिक़ है, अगर वो चाहे तो तुम सब को ख़त्म कर दे और एक नई मख्लूक़ वुजूद में ले आए और यह काम अल्लाह के लिये कुछ भी मुश्किल नहीं है ।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾

● **कियामत के दिन कोई किसी के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा :** सूर–ए–फ़ातिर आयत नंबर : १८ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : (क़ियामत के दिन) कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और जिस किसी पर बड़ा बोझ लदा हुवा हो, वो अगर किसी और को इस के उठाने की दावत देगा, तो इस में से कुछ भी उठाया नहीं जाएगा, चाहे वो (जिसे बोझ उठाने की दावत दी गई थी) कोई क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो, (ए पैग़म्बर!) तुम इनही लोगों को ख़बरदार कर सकते हो, जो अपने परवरदिगार को देखे बग़ैर उस से डरते हों और जिन्होंने नमाज़ क़ाइम की हो और जो शख़्स (ईमान लाकर) पाक होता है, वो अपने ही फ़ाइदे के लिये पाक होता है और आख़िर कार सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है ।

اَلَمۡ اَعۡهَدۡ اِلَيۡكُمۡ يٰبَنِىۡۤ اٰدَمَ اَنۡ لَّا تَعۡبُدُوا الشَّيۡطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۶۰﴾ وَّاَنِ اعۡبُدُوۡنِىۡ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۱﴾

● **अल्लाह के बताए हुए अहकाम पर चलना ही सीधा रास्ता है :** सूर–ए–यासीन आयत नंबर : ६०,६१ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए आदम के बेटो! क्या मैंने तुम्हें यह ताकीद नहीं कर दी थी के तुम शैतान की इबादत न करना, वो तुम्हारा खुला दुश्मन है और तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है ।

اَلۡيَوۡمَ نَخۡتِمُ عَلٰٓى اَفۡوَاهِهِمۡ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيۡدِيۡهِمۡ وَتَشۡهَدُ اَرۡجُلُهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۶۵﴾

● **बदन के आज़ा कियामत के दिन गवाही देंगे :** सूर–ए–यासीन आयत नंबर : ६५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : आज (यानी क़ियामत के दिन) हम उन के मुँह पर ताला लगा देंगे, उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पांव उस की गवाही देंगे जो कुछ वो किया करते थे ।

اَوَلَمۡ يَرَ الۡاِنۡسَانُ اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ نُّطۡفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيۡمٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِىَ خَلۡقَهٗ ؕ قَالَ مَنۡ يُّحۡىِ الۡعِظَامَ وَهِىَ رَمِيۡمٌ ﴿۷۸﴾ قُلۡ يُحۡيِيۡهَا الَّذِىۡۤ اَنۡشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِيۡمٌ ﴿۷۹﴾

● **अल्लाह के लिये दोबारा ज़िंदा करना कोई मुश्किल काम नहीं :** सूर–ए–यासीन आयत नंबर : ७७ ता ७९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : क्या इन्सान ने यह नहीं देखा के हमने उसे नुतफ़े से पैदा किया था? फिर अचानक वो खुल्लम खुल्ला झगड़ा करनेवाला बन गया, हमारे बारे में वो बातें बनाता है और ख़ूद अपनी पैदाइश को भुला बैठा है, केहता है के: इन हड्डियों को कौन ज़िंदगी देगा जब के वो गल चुकी होंगी? केह दो के उनको वही ज़िंदगी देगा जिस ने उन्हें पेहली बार पैदा किया था और वो (अल्लाह) पैदा करने का हर काम जानता है ।

رَبِّ هَبۡ لِىۡ مِنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۱۰۰﴾

● **नेक औलाद की दुआ :** सूर–ए–साफ़्फ़ात आयत नंबर : १०० में यह नसीहत की गई के हमेशा अल्लाह से नेक औलाद की दुआ करना चाहिये : जब हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने अल्लाह तआला से नेक औलाद की दुआ की तो अल्लाह तआला ने बुढ़ापे के आलम में निहायत हसीन व जमील, होनहार फ़र्ज़ंद इस्माईल उन को अता फ़रमाया, अल्लाह तआला बुढ़ापे में भी औलाद अता करने पर क़ादिर है, बेऔलाद लोगों को मायूस न होना चाहिये, बल्के अल्लाह तआला से पूरी उम्मीद के साथ दुआ करते रेहना चाहिये ।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَضِلُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌۢ بِمَا نَسُوۡا يَوۡمَ الۡحِسَابِ ﴿۲۶﴾

● **गुम्राह लोगों के लिये सख्त अज़ाब :** सूर–ए–साद आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : यक़ीन रखो के जो लोग अल्लाह के (बताए हुए) रास्ते से भटक जाते हैं, उनके लिये सख़्त अज़ाब है, क्यूं के उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया था ।

قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنۡذِرٌ ۖ وَّمَا مِنۡ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿۶۵﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿۶۶﴾

● **दाई दावत के दौरान तौहीद की खूब दावत दे :** सूर–ए–साद आयत नंबर : ६५, ६६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (ए पैग़म्बर!) केह दो के मैं तो एक ख़बरदार करने वाला हूँ और उस अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं जो एक है, जो सब पर ग़ालिब है, जो तमाम आस्मानों और ज़मीन और उनके दरमियान मौजूद हर चीज़ का मालिक है, जिसका इक़्तिदार सब पर छाया हुवा है, जो बहुत बख्शने वाला है ।

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ فَاعۡبُدِ اللّٰهَ مُخۡلِصًا لَّهُ الدِّيۡنَ ﴿۲﴾

● **इख्लास के साथ किया हुवा अमल ही मकबूल है :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : २ में यह अहम बात बताई गई है के अमल की क़ुबूलियत का मदार इख्लास पर है: अल्लाह तआला ने क़ुर्आने करीम की बहुत सी आयात में बंदों को अपनी इबादत इख्लास के साथ करने का हुक्म दिया है। इख्लास यह है के इन्सान जो भी नेक काम करे सिर्फ़ अल्लाह की रजामंदी के लिये करे, लोगों को दिखाने के लिये या अपनी शोहरत के लिये न करे । आमाल में इख्लास को बड़ी एहमियत हासिल है, किसी भी नेक अमल की क़ुबूलियत का मदार इख्लास पर है, इख्लास के बग़ैर किसी भी अमल का सवाब नहीं मिलता । इस लिये हमें हर काम को इख्लास के साथ करना चाहिये ।

وَاِذَا مَسَّ الۡاِنۡسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيۡبًا اِلَيۡهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعۡمَةً مِّنۡهُ نَسِىَ مَا كَانَ يَدۡعُوۡۤا اِلَيۡهِ مِنۡ قَبۡلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنۡدَادًا لِّيُضِلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ

● **तकलीफ़ में बंदा खुदा को याद करता है और नेअ्मत आने पर उसे भूल जाता है :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो वो अपने रब की तरफ़ मुतवज्जे हो कर पुकारना शुरू कर देता है, फिर जब अल्लाह तआला इन्सान को अपनी तरफ़ से कोई नेअ्मत अता फ़र्मा देता है, तो वो उस को भूल जाता है, जिसके लिये पेहले अल्लाह को पुकार रहा था और अल्लाह के साथ दूसरे माबूदों को शरीक करने लगता है, जिसके नतीजे में दूसरों को भी अल्लाह के रास्ते से गुम्राह करना शुरू कर देता है ।

قُلۡ يٰعِبَادِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوۡا رَبَّكُمۡ ؕ لِلَّذِيۡنَ اَحۡسَنُوۡا فِىۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرۡضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوۡنَ اَجۡرَهُمۡ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾

● **सब्र करने वालों के लिये बे–हिसाब अज्र है :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : १० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : (ए नबी!) केह दो के ए मेरे ईमान वाले बंदो! अपने परवरदिगार का ख़ौफ़ दिल में रखो, भलाई उनही की है जिन्होंने इस दुन्या में भलाई की है और अल्लाह की ज़मीन बहुत वसीअ् है, जो लोग सब्र से काम लेते हैं, उनका सवाब उन्हें बेहिसाब दिया जाएगा ।

وَالَّذِيۡنَ اجۡتَنَبُوا الطَّاغُوۡتَ اَنۡ يَّعۡبُدُوۡهَا وَاَنَابُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الۡبُشۡرٰى ۚ فَبَشِّرۡ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِيۡنَ يَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقَوۡلَ فَيَتَّبِعُوۡنَ اَحۡسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ هَدٰٮهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمۡ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿۱۸﴾

● **हिदायत याफ्ता लोगों की पेहचान :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : १७, १८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जिन लोगों ने ताग़ूत (शैतान और हर बातिल चीज़) की इबादत करने से परहेज़ किया और उन्होंने अल्लाह से दिल लगाया है, ख़ुश–ख़बरी उन ही के लिये है, लिहाज़ा मेरे उन बंदों को ख़ुशी की ख़बर सुना दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं तो उस में जो बेहतरीन होती है, उस की पैरवी करते हैं, यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है और यही हैं जो अक़्ल वाले हैं ।

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالۡحَقِّ ۚ فَمَنِ اهۡتَدٰى فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَا ۚ

● **हिदायत का फाइदा और गुम्राही का वबाल खुद इन्सान ही को होगा :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ४१ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: (ए पैग़म्बर!) हमने लोगों के फ़ाइदे के लिये तुम पर यह किताबे बरहक़ नाज़िल की है, अब जो शख़्स सीधे रास्ते पर आजाएगा, वो अपनी ही भलाई के लिये आएगा और जो गुम्राही इख्तियार करेगा, वो अपनी गुम्राही से अपना ही नुक़्सान करेगा ।

وَلَوۡ اَنَّ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا وَّمِثۡلَهٗ مَعَهٗ لَافۡتَدَوۡا بِهٖ مِنۡ سُوۡٓءِ الۡعَذَابِ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمۡ يَكُوۡنُوۡا يَحۡتَسِبُوۡنَ ۝ وَبَدَا لَهُمۡ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوۡا وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝ فَاِذَا مَسَّ الۡاِنۡسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلۡنٰهُ نِعۡمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوۡتِيۡتُهٗ عَلٰى عِلۡمٍ ؕ بَلۡ هِىَ فِتۡنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝

● **माल व दौलत हासिल होने पर अपना कमाल न समझें :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ४७ ता ४९ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है, अगर उन के पास वो सब कुछ हो जो ज़मीन में है और इस के साथ इतना ही और भी (हो), तो क़ियामत के दिन बदतरीन अज़ाब से बचने के लिये वो सब फ़िदया के तौर पर देने लगेंगे और अल्लाह की तरफ़ से वो कुछ उनके सामने आ जाएगा, जिस का उन्हें गुमान भी नहीं था, उन्होंने जो कमाई की थी, उस की बुराईयां उन के सामने ज़ाहिर हो जाएंगी और जिन बातों का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे, वो उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेंगी, फिर इन्सान (का हाल यह है के जब उस) को कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो वो हमें पुकारता है, इस के बाद जब हम उसे किसी नेअ्मत से नवाज़ते हैं, तो वो केहता है के यह तो मुझे हुनर की वजह से मिली है, नहीं! बल्के ये आज़माइश है, लेकिन उन में से अक्सर लोग नहीं जानते ।

قُلۡ يٰعِبَادِىَ الَّذِيۡنَ اَسۡرَفُوۡا عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ لَا تَقۡنَطُوۡا مِنۡ رَّحۡمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِيۡعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ۝

● **अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ५३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : (ए नबी !) केह दो के ए मेरे वो बंदो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती कर रखी है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो (सच्चे दिल से तौबा कर लो), यक़ीन जानो अल्लाह सारे के सारे गुनाह माफ़ कर देता है, यक़ीनन वो बहुत बख़्शने वाला, बड़ा महेरबान है ।

وَاَنِيۡبُوۡۤا اِلٰى رَبِّكُمۡ وَاَسۡلِمُوۡا لَهٗ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِيَكُمُ الۡعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنۡصَرُوۡنَ ۝

● **अज़ाब आने से पेहले तौबा कर लो :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ५४ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जे हो जाओ और उस के फ़र्मांबरदार बन जाओ, इस से पेहले के तुम्हारे पास अज़ाब आ पहुंचे, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी ।

وَاتَّبِعُوۡۤا اَحۡسَنَ مَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكُمۡ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِيَكُمُ الۡعَذَابُ بَغۡتَةً وَّاَنۡتُمۡ لَا تَشۡعُرُوۡنَ ۝ اَنۡ تَقُوۡلَ نَفۡسٌ يّٰحَسۡرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطۡتُّ فِىۡ جَنۡۢبِ اللّٰهِ وَاِنۡ كُنۡتُ لَمِنَ السّٰخِرِيۡنَ ۝ اَوۡ تَقُوۡلَ لَوۡ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰٮنِىۡ لَكُنۡتُ مِنَ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝ اَوۡ تَقُوۡلَ حِيۡنَ تَرَى الۡعَذَابَ لَوۡ اَنَّ لِىۡ كَرَّةً فَاَكُوۡنَ مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۝

● **कियामत में अफसोस करने से कोई फाइदा नहीं होगा :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ५५ ता ५८ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास जो बेहतरीन बातें नाज़िल की गई हैं, उनकी पैरवी करो, क़ब्ल इस के के तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न चले, कहीं ऐसा न हो के किसी शख़्स को यह केहना पड़े के हाय अफ़सोस मेरी इस कोताही पर, जो मैंने अल्लाह के मुआमले में की! और सच्ची बात यह है के मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में शामिल हो गया था, या कोई यह कहे के अगर मुझे अल्लाह हिदायत देता, तो मैं भी मुत्तक़ी लोगों में शामिल होता, या जब अज़ाब आँखों से देख ले, तो यह कहे के काश मुझे एक मर्तबा वापस जाने का मौक़ा मिल जाए, तो मैं नेक लोगों में शामिल हो जाऊं!।

وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَصَعِقَ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيۡهِ اُخۡرٰى فَاِذَا هُمۡ قِيَامٌ يَّنۡظُرُوۡنَ ۝ وَاَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ بِنُوۡرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الۡكِتٰبُ وَجِايۡٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡحَقِّ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ۝ وَوُفِّيَتۡ كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِمَا يَفۡعَلُوۡنَ ۝

● **कियामत का मंज़र :** सूर–ए–ज़ुमर आयत नंबर : ६८ ता ७० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : (क़ियामत के दिन) सूर में फूंक मारी जाएगी, तमाम आस्मान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएंगे, मगर अल्लाह जिसको चाहे, फिर (कुछ मुद्दत के बाद) इस (सूर) में दूसरी मर्तबा फूंक मारी जाएगी, तो पल भर में सब के सब खड़े हो जाऐंगे और (चारों तरफ़) देखने लगेंगे और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और नाम–ए–आमाल रख दिया जाएगा और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जाऐंगे और लोगों के दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला किया जाएगा और उन पर ज़रा ज़ुल्म न होगा और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और अल्लाह सब कामों को ख़ूब जानता है ।

يٰقَوۡمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا مَتَاعٌ ۫ وَاِنَّ الۡاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ الۡقَرَارِ ۝ مَنۡ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجۡزٰۤى اِلَّا مِثۡلَهَا ۚ وَمَنۡ عَمِلَ صَالِحًا مِّنۡ ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ يُرۡزَقُوۡنَ فِيۡهَا بِغَيۡرِ حِسَابٍ ۝

● **आखिरत का घर ही असल ठिकाना और रेहने की जगह है :** सूर–ए–मोमिन आयत नंबर : ३९, ४० में अल्लाह तआला एक मोमिन की बात नक़ल करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं: ए मेरी क़ौम! ये दुन्यवी ज़िंदगी तो बस थोड़ा सा मज़ा है और यक़ीन जानो के आख़िरत ही रहने बसने का असल घर है और जिस शख़्स ने कोई बुराई की होगी, उसे उसी के बराबर बदला दिया जाएगा और जिसने नेक काम किया होगा, चाहे वो मर्द हो या औरत, जब के वो मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहां उन्हें बे–हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा ।

وَلَا تَسۡتَوِى الۡحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ فَاِذَا الَّذِىۡ بَيۡنَكَ وَبَيۡنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيۡمٌ ۝ وَمَا يُلَقّٰٮهَاۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا ۚ وَمَا يُلَقّٰٮهَاۤ اِلَّا ذُوۡ حَظٍّ عَظِيۡمٍ ۝

● **दुश्मन के साथ अच्छा बरताव करने से वो अच्छा दोस्त बन जाता है :** सूर–ए–हा मीम सज्दा आयत नंबर : ३४,३५ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, तुम बुराई का मुक़ाबला ऐसे तरीक़े से करो जो बेहतरीन हो, नतीजा यह होगा के जिस के और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी थी, वो देखते ही देखते ऐसा हो जाएगा जैसे वो जिगरी दोस्त हो और ये बात सिर्फ उन्ही को अता होती है, जो सब्र से काम लेते हैं और ये बात उसी को अता होती है, जो बड़े नसीबे वाला हो ।

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨

• **कियामत में ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो ज़ालिम लोग हैं, उनका न कोई रखवाला है और न कोई मददगार ।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝١٩

• **अल्लाह तआला अपने बंदों पर बडा महेरबान है :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महेरबान है, वो जिसको चाहता है, रिज़्क़ देता है और वही है जो क़ुव्वत का भी मालिक है, इक़्तिदार का भी मालिक है ।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢٠

• **दुनिया तलब करने वाले का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : २० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहता हो, हम उस की खेती में और इज़ाफ़ा करेंगे और जो शख्स (सिर्फ़) दुन्या की खेती चाहता हो, हम उसे उसी में से दे देंगे और (फिर) आख़िरत में उस का कोई हिस्सा नहीं होगा ।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝٢٢

• **कियामत में ज़ालिम लोगों को अपनी बदआमाली का डर होगा :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर: २२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (उस वक़्त) तुम इन ज़ालिमों को देखोगे के उन्होंने जो कमाई की है, उस (के वबाल) से डरे हुए होंगे और वो (वबाल) उन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक अमल किये हैं, वो जन्नतों की कियारियों (बाग़ों) में होंगे, उन्हें अपने परवरदिगार के पास वो सब कुछ मिलेगा, जो वो चाहेंगे, यही बड़ा फ़ज़ल है ।

وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝٢٣

• **अल्लाह तआला नेकी की कदर करता है :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : २३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो शख़्स कोई भलाई करेगा, हम उस भलाई को और ख़ूबसूरत बना देंगे, यक़ीन जानो अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा क़दरदां है ।

اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٢٤ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢٥

• **अल्लाह तआला तौबा करने पर गुनाह माफ करता है :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : २४, २५ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यक़ीनन वह अल्लाह सीनों में छिपी हुई बातों तक को जानता है और वही है जो अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और गुनाहों को माफ़ करता है और जो कुछ तुम करते हो, उस का पूरा इल्म रखता है ।

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ

• **नेक काम करने वाले को अल्लाह तआला बढकर सवाब देते हैं :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : जो लोग ईमान लाए हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं, वो उन की दुआ सुनता है और उन्हें अपने फ़ज़ल से और ज़्यादा देता है ।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٣٦ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۝٣٧ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٨ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝٣٩

• **मोमिन बंदों की सिफात :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : ३६ ता ३९ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: ग़रज़ तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है, वो दुन्यवी ज़िंदगी का सामान है और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो कहीं बेहतर और हमेशा रेहने वाली है, उन लोगों के लिये जो ईमान लाए हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा करते हैं और जो बड़े बड़े गुनाहों से बचते हैं और जब उन को गुस्सा आता है, तो वो माफ़ कर देते हैं और जिन्होंने अपने परवरदिगार की बात मानी है और नमाज़ क़ाइम की है और उन के मुआमलात आपस के मश्वरे से तै होते हैं और हमने उन्हें जो रिज़्क दिया है, उस में से वो (नेकी के कामों में) ख़र्च करते हैं और जब उन पर कोई ज़्यादती होती है, तो वो अपना बचाओ करते हैं ।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝٤١ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَي الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٢ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝٤٣

• **नाहक ज़ुल्म करने वालों के लिये दर्द नाक अज़ाब है :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : ४१ ता ४३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद (बराबर का) बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, इल्ज़ाम तो उन पर है जो ज़मीन में नाहक़ ज़ुल्म करते हैं, ऐसे लोगों के लिये दर्दनाक अज़ाब है और यह हक़ीक़त है के जो कोई सब्र से काम ले और माफ़ कर दे, तो यह बड़ी हिम्मत की बात है ।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝٤٩ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٥٠

• **औलाद देना ; अल्लाह ही के हाथ में है :** सूर–ए–शूरा आयत नंबर : ४९,५० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : सारे आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत अल्लाह ही की है, वो जो चाहता है, पैदा करता है, वो जिस को चाहता है, लड़कियां देता है और जिसको चाहता है, लड़के देता है, या फिर उनको मिला–जुला कर लड़के भी देता है और लड़कियां भी और जिस को चाहता है, बांझ बना देता है, यक़ीनन वो इल्म का भी मालिक है, कुदरत का भी है ।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْۤ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝

● **वालिदैन के साथ अच्छे बरताव पर गुनाह माफ होते हैं :** सूर–ए–अह्क़ाफ़ आयत नंबर : १५,१६ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हमने इन्सान को अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताओ करने का हुक्म दिया है, उस की माँ ने बड़ी मशक़्क़त से उसे (पेट में) उठाए रखा और बड़ी मशक़्क़त से उस को जना और उस को उठाए रखने और उस के दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने होती है, यहां तक के जब वो अपनी जवानी को पहुंच गया और चालीस साल की उम्र को पहुंचा तो वो केहता है : या रब! मुझे तौफ़ीक़ दीजिये के मैं आपकी इस नेअ्मत का शुक्र अदा करूँ, जो आपने मुझे और मेरे माँ बाप को अता फ़रमाई और ऐसे नेक अमल करूँ, जिन से आप राज़ी हो जाएं और मेरे (नफ़ा के) लिये मेरी औलाद में भी सलाहियत पैदा कर दीजिये (यानी इन औलाद से मुझे दुन्या और आख़िरत में चेन व सुकून हासिल हो), मैं आप के सामने तौबा करता हूँ और मैं फ़र्मांबरदारों में शामिल हूँ, यह वो लोग हैं जिन से हम उनके बेहतरीन आमाल क़ुबूल करेंगे और उन की बुराइयों को माफ़ करेंगे (जिस के नतीजे में) वो जन्नत वालों में शामिल होंगे, उस सच्चे वाअ्दे की वजह से जो उन से किया जाता था ।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝

● **मुसलमानों की दो जमातों में टकराव के वक्त उन में सुलह कराओ :** सूर–ए–हुजुरात आयत नंबर : ९,१० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं : अगर मुसलमानों की दो जमातें आपस में लड़ पड़ें, तो उन के दरमियान सुलह कराओ, फिर अगर उन में से एक जमात दूसरे के साथ ज़्यादती करे, तो उस जमात से लड़ो जो ज़्यादती कर रही हो, यहां तक के वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए, चुनांचे अगर वो लौट आए, तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ सुलह करा दो और हर मुआमले में इन्साफ़ से काम लिया करो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है, हक़ीक़त तो यह है के तमाम मुसलमान भाई भाई हैं, इस लिये अपने दो भाइयों के दरमियान ताल्लुक़ात अच्छे बनाओ, ताके तुम्हारे साथ रहमत का मुआमला किया जाए ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

● **दूसरों का मज़ाक मत उडाओ और न बुरे अल्काब से पुकारो :** सूर–ए–हुजुरात आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: ए ईमान वालो! न तो मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है के वो (जिनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हे) ख़ुद उन (मज़ाक़ उड़ाने वालों) से बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है के वो (जिन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है) ख़ुद उन (मज़ाक़ उड़ाने वालियों) से बेहतर हों और तुम एक दूसरे को ताना न दिया करो और न एक दूसरे को बुरे अल्क़ाब से पुकारो, ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना (यानी किसी मुसलमान के साथ यह नाम लगना के ये गुनाहगार है) बहुत बुरी बात है और जो लोग इन बातों से न रुकें, तो वो ज़ालिम लोग हैं ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ

● **बदगुमानी से बचो:** सूर–ए–हुजुरात आयत नंबर : १२ में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ए ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और किसी (का ऐब तलाश करने के लिये उस) की जासूसी न करो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो ।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

● **फख़्र व इज़्ज़त की चीज़ खानदान नहीं ; तक्वा है :** सूर–ए–हुजुरात आयत नंबर :१३ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए लोगो! हक़ीक़त यह है के हमने तुम सब को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़ौमों और ख़ानदानों में इस लिये तक़सीम किया है ताके तुम एक दूसरे की पेहचान कर सको, दर हक़ीक़त अल्लाह के नज़दीक तुम में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है, जो तुम में सब से ज़्यादा मुत्तक़ी हो, यक़ीन रखो के अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हर चीज़ से बाख़बर है ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ۝

● **हर इन्सान के साथ नेकी और बुराई लिखने वाले दो फरिश्ते मौजूद होते हैं :** सूर–ए–काफ आयत नंबर : १६ ता २१ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हक़ीक़त यह है के हमने इन्सान को पैदा किया है और उस के दिल में जो खयालात आते हैं, उनको हम ख़ूब जानते हैं और हम उस की शेह रग (गर्दन की नस) से भी ज़्यादा उस के क़रीब हैं, उस वक़्त भी जब (आमाल को) लिखने वाले दो फ़रिश्ते लिख रहे होते हैं, एक दाएं जानिब और दूसरा बाएं जानिब बैठा होता है, इन्सान कोई लफ़्ज़ ज़बान से निकाल नहीं पाता मगर इस पर एक निगरां मुक़र्रर होता है, हर वक़्त (लिखने के लिये) तैयार और मौत की सख़्ती सचमुच आने ही वाली है, (ए इन्सान) ये वो चीज़ है जिस से तू भागता था और सूर फूँका जाने वाला है, यह वो दिन होगा, जिस से डराया जाता था और हर शख़्स (उस दिन) इस तरह आएगा के उस के साथ एक हाँकने वाला होगा और एक गवाही देने वाला ।

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾

● **पैदाइश का मक़सद अल्लाह की इबादत और उस की मअ्रिफत है :** सूर–ए–ज़ारियात आयत नंबर : ५५ ता ५८ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया : नसीहत करते रहो, क्यूं के नसीहत ईमान लाने वालों को फ़ाइदा देती है और मैंने जिन्नात और इन्सानों को इस के सिवा किसी और काम के लिये पैदा नहीं किया के वो मेरी इबादत करें (और मेरे रब होने को जाने), मैं उन से किसी किस्म का रिज़्क़ नहीं चाहता और न ये चाहता हूँ के वो मुझे खिलाएं, अल्लाह तआला तो ख़ुद ही रज़्ज़ाक है, ज़बरदस्त ताक़त वाला है ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾ وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

● **मुत्तक़ी लोग जन्नत में ऐश के साथ रहेंगे :** सूर–ए–तूर आयत नंबर : १७ ता २८ में अल्लाह तआला फ़रमाता है : मुत्तक़ी लोग बेशक बाग़ों और नेअ्मतों में होंगे, वो लुत्फ़ उठा रहे होंगे, इस वजह से के उनके परवरदिगार ने उन्हें नवाज़ा और उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाया, (उन से कहा जाएगा के) ख़ूब मज़े से खाओ पियो, उन आमाल के बदले में जो तुम किया करते थे, वो एक लाइन से लगे हुए तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उनकी शादी कर देंगे और जो लोग ईमान लाए हैं और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनकी पैरवी की है, तो उनकी औलाद को हम उनही के साथ शामिल कर देंगे और उनके अमल में से किसी चीज़ की कमी नहीं करेंगे और (काफ़िरों में से) हर शख़्स अपने आमाल में गिरफ़्तार रहेगा और हम उन्हें (यानी उन जन्नत वालों को) एक के बाद एक फल और गोश्त जो भी उनका दिल चाहेगा देते चले जाऐंगे, वहां वो ऐसे शराब के जाम पर (दिल लगी करते हुए) छीना–झपटी कर रहे होंगे, जिस में न कोई बेहूदगी होगी और न कोई गुनाह होगा और उन के आस पास वो नौजवान फिर रहे होंगे जो उनही (की ख़िदमत) के लिये ख़ास होंगे, (वो) ऐसे (ख़ूबसूरत होगे) जैसे छुपा कर रखे हुए मोती और वो एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जे हो कर हालात पूछेंगे, कहेंगे के हम जब अपने घर वालों (यानी दुन्या) में थे, तो डरे सहमे रेहते थे, आख़िर अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान फ़रमाया और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया, हम इस से पेहले उस (अल्लाह) से दुआएं मांगा करते थे (के हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा), हक़ीक़त ये है के वही (अल्लाह) बड़ा एहसान करने वाला बहोत महेरबान है।

أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾ أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾ أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ أَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

● **खेती, पानी और आग अल्लाह तआला की बडी नेअ्मतें हैं :** सूर–ए–वाक़िया आयत नंबर : ६३ ता ७३ में अल्लाह तआला फ़रमाता है: अच्छा यह बताओ के जो कुछ तुम ज़मीन में बोते हो, क्या उसे तुम उगाते हो, या उगाने वाले हम हैं? अगर हम चाहें तो उसे चूरा चूरा कर डालें, जिस पर तुम ताज्जुब करते रेह जाओ के हम तो क़र्ज़दार रेह गए बल्के हम बिलकुल ही महरूम रेह गए, अच्छा ये बताओ के ये पानी जो तुम पीते हो, क्या उसे बादलों से तुमने उतारा है, या उतारने वाले हम हैं? अगर हम चाहें तो उसे कड़वा बना कर रख दें, फिर तुम क्यूं शुक्र अदा नहीं करते? अच्छा ये बताओ के ये आग जो तुम जलाते हो, क्या उस का दरख़्त तुमने पैदा किया है, या पैदा करने वाले हम हैं? हमने ही इस को नसीहत हासिल करने की चीज़ और मुसाफ़िरों के लिये फ़ाइदे की चीज़ बनाया है ।

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢١﴾

● **आस्मान व ज़मीन से भी चौडी जन्नत हासिल करने के लिये जल्दी करो :** सूर–ए–हदीद आयत नंबर : २०, २१ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: ख़ूब समझ लो के इस दुन्या वाली ज़िंदगी की हक़ीक़त बस यह है के वो नाम है खेल कूद का, ज़ाहिरी सजावट का, तुम्हारे एक दूसरे पर फ़ख़्र जताने का और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करने का, उस की मिसाल ऐसी है जैसे एक बारिश जिस से उगने वाली चीज़ें किसानों को बहुत अच्छी लगती हैं, फिर वो अपना ज़ोर दिखाती है फिर तुम उस को देखते हो के पीली पड़ गई है, फिर वो चूरा चूरा हो जाती है और आख़िरत में (एक तो) सख़्त अज़ाब है और (दूसरे) अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश है और ख़ुशनूदी और दुन्या वाली ज़िंदगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है, लिहाज़ा दौड़ो अपने परवरदिगार की बख़्शिश की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई सारे आस्मानों और ज़मीन की चौड़ाई जैसी है, ये उन लोगों के लिये तैयार की गई है जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए हैं, यह अल्लाह का फ़ज़ल है, वो जिसको चाहता है, देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا

● **मज्लिस के आदाब का खयाल रखो :** सूर–ए–मुजादला आयत नंबर: ११ में अल्लाह तआला मज्लिस का अदब ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए के मज्लिसों में दूसरों के लिये गुंजाइश पैदा करो (जिस में आने वालों को भी जगह मिल जाए), तो गुंजाइश पैदा कर दिया करो, (आनेवाले को जगह दे दिया करो) अल्लाह तुम्हारे लिये (जन्नत में) वुस्अत पैदा करेगा और जब कहा जाए के उठ जाओ, तो उठ जाया करो ।

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

● **बुख्ल व कंजूसी से बचने वाला काम्याब है** : सूर–ए–हश्र आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला कंजूसी की बुराई करते हुए फ़रमाते हैं : जो लोग अपनी तबीयत की कंजूसी से महफ़ूज़ हो जाएं, वही हैं जो फ़लाह पाने वाले हैं ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

● **अल्लाह को भूल कर ज़िंदगी न गुज़ारो :** सूर–ए–हश्र आयत नंबर : १८,१९ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ए ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स देखभाल ले के कल (क़ियामत) के वास्ते उस ने क्या (ज़ख़ीरा) भेजा (यानी नेक आमाल में कोशिश करो जो के आख़िरत का ज़ख़ीरा है) और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की ख़बर है, तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो अल्लाह को भूल बैठे थे, तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद अपने आपसे ग़ाफ़िल कर दिया, वही लोग हैं जो नाफ़रमान हैं ।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

● **क़ियामत के दिन रिश्ता नाता काम नहीं आएगा :** सूर–ए–मुम्तहिना आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : तुम्हारे रिश्तेदार और औलाद क़ियामत के दिन काम न आवेंगे, ख़ुदा ही तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा और अल्लाह तुम्हारे सब आमाल को ख़ूब देखता है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝

● **दाई को खुद भी अमल करना चाहिये :** सूर–ए–सफ़ आयत नंबर : २,३ में अल्लाह तआला हिदायत देते हैं: ए ईमान वालो! ऐसी बात क्यूं केहते हो जो करते नहीं हो, ख़ुदा के नज़दीक ये बात बहुत नाराज़ी की है के ऐसी बात कहो जो करो नहीं ।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

● **मौत से कितना ही दूर भागो, वो आकर ही रहेगी :** सूर–ए–जुमा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला का इरशाद है : ए नबी आप केह दो! जिस मौत से तुम भागते हो, वो तुमको पकड़ कर रहेगी, फिर तुम्हें उस (अल्लाह) की तरफ़ लौटाया जाएगा, जिसे तमाम पोशीदा और खुली हुई बातों का पूरा इल्म है, फिर वो तुम्हें बताएगा के तुम क्या कुछ किया करते थे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

● **जब जुमा की अज़ान हो जाए, तो कारोबार बंद कर दो :** सूर–ए–जुमा आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला जुमा की नमाज़ के मुताल्लिक़ हुक्म बयान करते हुए फ़रमाते हैं: ए ईमान वालो! जब जुमा के रोज़ नमाज़ के लिये अज़ान कही जाया करे, तो तुम अल्लाह की याद की तरफ़ चल पड़ा करो और ख़रीद व फ़रोख्त छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है अगर तुम को कुछ समझ हो ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

● **जुमा की नमाज़ पढने के बाद कारोबार कर सकते हैं :** सूर–ए–जुमा आयत नंबर : १० में अल्लाह तआला ताजिरों को हिदायत देते हैं: जब (जुमा की) नमाज़ पूरी हो चुके, तो तुम ज़मीन में चलो फिरो और ख़ुदा की रोज़ी तलाश करो और अल्लाह को कस्रत से याद करते रहो ताके तुम काम्याब हो ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَاۗءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

● **अल्लाह के दिये हुए रिज़्क में से मौत आने से पेहले पेहले खर्च कर लो :** सूर–ए–मुनाफ़िक़ून आयत नंबर : १०, ११ में अल्लाह तआला ये नसीहत करते हैं : ए ईमान वालो! तुम्हारी दौलत और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाएं और जो लोग ऐसा करेंगे, वो बड़े नुक़्सान का मुआमला करने वाले होंगे और हम ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है, इस में से ख़र्च करो, इस से पेहले के तुम में से किसी के पास मौत आ जाए तो वो यह कहे के ए मेरे परवरदिगार! तूने मुझे थोड़ी देर के लिये मोहलत क्यों न दे दी के मैं ख़ूब सदक़ा करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता और जब किसी शख़्स का मुअय्यन वक़्त आ जाएगा तो अल्लाह उसे हरगिज़ मोहलत नहीं देगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह इस से पूरी तरह बाख़बर है ।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

● **इन्सान काइनात की सबसे खूबसूरत मख्लूक है :** सूर–ए–तग़ाबुन आयत नंबर : ३,४ में अल्लाह तआला बयान करते हैं: अल्लाह तआला ने आस्मानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है और तुम्हारी सूरतें बनाई हैं और तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाई हैं और इसी की तरफ़ आख़िर कार पलट कर जाना है, आस्मानों और ज़मीन में जो कुछ है वो उसे जानता है और जो कुछ तुम छुप कर करते हो और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हो, उस का भी उसे पूरा इल्म है और अल्लाह दिलों की बातों तक का ख़ूब जानने वाला है ।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

● **हर मुसीबत अल्लाह के हुक्म से आती है :** सूर–ए–तग़ाबुन आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: कोई मुसीबत अल्लाह के हुक्म के बग़ैर नहीं आती और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाता है, वो उस के दिल को (सब्र की) राह दिखाता है और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है ।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝۲

● **दुनिया आज़माइश और आखिरत बदले की जगह है :** सूर–ए–मुल्क आयत नंबर : २ में यह सबक़ दिया गया है के दुन्या इम्तिहान की जगह है : अल्लाह तआला ने बंदों का इम्तिहान लेने के लिये दुन्या में मौत व हयात का सिलसिला जारी फ़रमाया है, जो शख़्स अच्छे आमाल करेगा, वो इस इम्तिहान में काम्याब होगा और जो बुरे आमाल करेगा वो नाकाम होगा और वहां की नाकामी में ही हमेशा हमेश की नाकामी और रुस्वाई है, लिहाज़ा इन्सान को चाहिये के अपनी ज़िंदगी को ग़नीमत जान कर इस इम्तिहान में काम्याबी के लिये ज़्यादा से ज़्यादा नेक काम करने की कोशिश करे ।

اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۴

● **मौत का तै शुदा वक्त कोई टाल नहीं सकता :** सूर–ए–नूह आयत नंबर : ४ में अल्लाह तआला का फ़रमान है: बेशक जब अल्लाह का मुक़र्रर किया हुवा (मौत का) वक़्त आ जाता है तो फिर वो मुअख्खर नहीं होता (यानी उसे रोका नहीं जा सकता), काश के तुम समझने वाले होते ।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝۱۰ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝۱۱ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝۱۲

● **तौबा व इस्तिगफार करने से अल्लाह तआला खूब नेअ्मतें देते हैं :** सूर–ए–नूह आयत नंबर : १० ता १२ में अल्लाह तआला हज़रत नूह عليه السلام की बात नक़ल करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं: अपने परवरदिगार से माफ़ी माँगो, यक़ीन जानो वो बहुत बख्शने वाला है, वो तुम पर आस्मान से ख़ूब बारिशें बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिये बाग़ात पैदा करेगा और तुम्हारे लिये नहरों का इंतिज़ाम करेगा ।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝۸ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝۹

● **पाबंदी के साथ अल्लाह की इबादत और ज़िक्र करो :** सूर–ए–मुज़्ज़म्मिल आयत नंबर : ८,९ में अल्लाह तआला का फ़रमान है : अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और सब से अलग हो कर पूरे के पूरे उसी के हो के रहो (वही अल्लाह है जो) मश्रिक़ व मग्रिब का मालिक है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इस लिये उसी को काम बनाने वाला समझो ।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝۴ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝۵

● **ज़ाहिरी व बातिनी गंदगियों से दूर रहो :** सूर–ए–मुदस्सिर आयत नंबर : ४,५ में अल्लाह तआला का इरशाद है : अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से दूर रहो । (खुलासा यह है के अपने आप को गुनाह और माअ्सियत से बचाए रखें और पाक साफ रहें)

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝۲۶ وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۝۲۷ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝۲۸ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝۲۹ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨ الْمَسَاقُ ۝۳۰

● **एक दिन खुदा के पास जाना ही है :** सूर–ए–क़ियामह आयत नंबर : २६ ता ३० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ख़बरदार! जब जान हलक़ तक पहुंच जाएगी और कहा जाएगा के है कोई झाड़ फूंक करने वाला? और इन्सान समझ जाएगा जुदाई का वक़्त आ गया और (एक) पिंडली (दूसरी) पिंडली से लिपट जाएगी, तो उस दिन तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ रवान्गी होगी ।

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝۵ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝۶

● **जन्नतियों को काफूर मिलाई हुई पाकीज़ा शराब पिलाई जाएगी :** सूर–ए–दहर आयत नंबर : ५,६ में अल्लाह तआला ख़ुश–ख़बरी सुनाते हुए फ़रमाते हैं : बेशक नेक लोग (जन्नत में) ऐसे जाम से मश्रूबात पिएंगे जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी, ये मश्रूबात एक ऐसे चश्मे के होंगे, जिस से ख़ुदा के ख़ास बंदे पियेंगे, वो उसे (जहां चाहेंगे) आसानी से बहा कर ले जाएंगे।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝۱۲ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝۱۳ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝۱۴ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝۱۵ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝۱۶ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝۱۷ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝۱۸ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝۱۹ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝۲۰ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝۲۱ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝۲۲

● **जन्नत की नेअ्मतें :** सूर–ए–दहर आयत नंबर : १२ ता २२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : उन्होंने जो सब्र से काम लिया था, उस के बदले (अल्लाह तआला) उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता फ़रमाएगा, वो उन बाग़ों में आराम देने वाले तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे, जहां न धूप की गर्मी देखेंगे और न कड़ाके की सर्दी और हालत ये होगी के इन बाग़ों के साये उन पर झुके हुए होंगे और उन के फल मुकम्मल तौर से उन के क़ाबू में कर दिये जाएंगे और उन के पास चांदी के बर्तन लाए जाएंगे और वो प्याले लाए जाएंगे जो शीशे के होंगे, शीशे भी चांदी के जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ में भरा होगा और वहां उन को शराब का ऐसा जाम पिलाया जाएगा, जिस में सोंठ मिला हुवा होगा (और ये जाम) वहां के ऐसे चश्मे से (होगा) जिस का नाम सलसबील है, उनके सामने ऐसे लड़के घूम रहे होंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, जब तुम उन्हें देखोगे, तो यह महसूस करोगे के वो मोती हैं जो बिखेर दिये गए हैं और जब तुम वो जगह देखोगे, तो तुम्हें नेअ्मतों की एक दुन्या और एक बड़ी सल्तनत नज़र आएगी, उन के ऊपर बारीक रेशम का सब्ज़ लिबास और दबीज़ (मोटे) रेशम के कपड़े भी होंगे और उन्हें चांदी के कंगन पेहनाए जाएंगे और उनका परवरदिगार उन्हें निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएगा (और फ़रमाएगा के) ये है तुम्हारा इनाम! और तुम ने (दुन्या में) जो मेहनत की थी, उस की पूरी क़दरदानी की गई है ।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝۲۵ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ۝۲۶

● **सुबह व शाम अल्लाह का ज़िक्र किया करो :** सूर–ए–दहर आयत नंबर : २५,२६ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: अपने परवरदिगार का सुबह व शाम ज़िक्र किया करो और कुछ रात को भी उस के आगे सज्दे किया करो और रात के बड़े हिस्से में उस की तस्बीह करो ।

اِنَّاۤ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

● **हर अच्छा व बुरा अमल आखिरत में सामने होगा :** सूर–ए–नबा आयत नंबर : ४० में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: (लोगो!) हमने तुमको नज़दीक आने वाले अज़ाब से डरा दिया है (जो के ऐसे दिन में वाके होने वाला है) जिस दिन हर शख़्स उन आमाल को (अपने सामने हाज़िर) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किये होंगे और काफ़िर (अफ़सोस की वजह से) कहेगा के काश में मिट्टी हो जाता (ताके सज़ा से बच जाता)।

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

● **कियामत के दिन कोई किसी की मदद नहीं करेगा :** सूर–ए–अबस आयत नंबर : ३३ ता ४२ में क़ियामत का एक ख़ौफ़नाक मंज़र बयान करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जब कानों को बेहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा (यानी क़ियामत का दिन आ जाएगा) जिस रोज़ आदमी अपने भाई से और अपनी माँ से और अपने बाप से और अपनी बीवी से और अपने बेटों से भागेगा (यानी कोई किसी की हमदर्दी नहीं करेगा) क्यूं के उनमें हर एक को उस दिन अपनी ऐसी फ़िक्र पड़ी होगी के उसे दूसरों का होश नहीं होगा और बहुत से चेहरे उस रोज़ (ईमान की वजह से) चमकते दमकते होंगे, हंसते, ख़ुशी मनाते हुए और बहुत से चेहरों पर उस रोज़ ख़ाक (मिट्टी) पड़ी होगी, स्याही (कालिक) ने उन्हें ढांप रखा होगा, यह वही लोग होंगे, जो काफ़िर थे, बदकार थे ।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝ فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝

● **नाम–ए–आमाल दाएं या बाएं हाथ में दिये जाने वालों का हाल :** सूर–ए–इंशिक़ाक़ आयत नंबर : ६ ता १२ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ए इन्सान! तू अपने परवरदिगार के पास पहुंचने तक मुसलसल किसी मेहनत में लगा रहेगा, यहां तक के उस से जा मिलेगा, फिर जिस शख़्स को उस का आमाल–नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा, उस से तो आसान हिसाब लिया जाएगा और वो अपने घरवालों के पास ख़ुशी मनाता हुवा वापस आएगा, लेकिन वो शख़्स जिस को उस का आमाल–नामा उस की पुश्त (पीठ) के पीछे से दिया जाएगा, वो मौत को पुकारेगा और भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा ।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝

● **दोज़खियों का हाल :** सूर–ए–गाशियह आयत नंबर : १ ता ७ में अल्लाह तआला का फ़रमान है: क्या तुम्हें उस वाक़िये (यानी क़ियामत) की ख़बर पहुंची है जो सब पर छा जाएगा? बहुत से चेहरे उस दिन उतरे हुए होंगे, मुसीबत झेलते हुए थकन से चूर! वो दहेकती हुई आग में दाख़िल होंगे, उन्हें खोलते हुए (गर्म) चश्मे से पानी पिलाया जाएगा, उन के लिये एक काँटेदार झाड़ के सिवा कोई खाना नहीं होगा, जो न जिस्म का वज़न बढ़ाएगा और न भूक मिटाएगा ।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝

● **काम्याब और नाकाम शख्स :** सूर–ए–शम्स आयत नंबर : ९,१० में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: जो शख़्स (अल्लाह की फ़रमांबरदारी कर के) नफ़्स (के ज़ाहिर व बातिन) को पाकीज़ा बनाएगा, वो काम्याब हो जाएगा और जो शख़्स इस (नफ़्स) को (गुनाह के दलदल में) धंसाएगा, वो नाकाम हो जाएगा।

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝

● **यतीम और मांगने वालों के साथ अच्छा बरताव करो :** सूर–ए–ज़ुहा आयत नंबर : ९, १० में अल्लाह तआला नसीहत फ़रमाते हैं: आप यतीम पर सख़्ती न कीजिये और मांगने वाले को मत झिड़किये (अगर कोई उज्र हो तो नरमी के साथ माज़िरत कर लो)।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

● **ज़र्रा बराबर भी नेकी या बुराई करने वाले कियामत में उस का अंजाम देख लेंगे :** सूर–ए–ज़िलज़ाल आयत नंबर : ७,८ में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जिस शख़्स ने (दुन्या में) ज़र्रा बराबर कोई भलाई की होगी, वो उसे (आख़िरत में) देख लेगा और जिस शख़्स ने (दुन्या में) ज़र्रा बराबर भी कोई बुराई की होगी, वो उसे (आख़िरत में) देख लेगा ।

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

● **नेक अमल करने वाले मोमिन बंदे काम्याब हैं :** सूर–ए–अस्र में अल्लाह तआला ताकीद के साथ फ़रमाते हैं : क़सम है ज़माने की, इन्सान (अपनी उम्र ज़ायेअ करने की वजह से) बड़े ख़सारे में है मगर वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ पर (क़ाइम रेहने की) नसीहत करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाबंदी की नसीहत करते रहे ।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝

● **ऐब लगाने और ताना देने वाले के लिये वईद :** सूर–ए–हुमज़ह आयत नंबर : १ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: हर ऐसे शख़्स के लिये बड़ी ख़राबी है, जो पीठ पीछे दूसरों पर ऐब लगाने वाला (और) मुँह पर ताना देने वाला हो ।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝

● **नमाज़ में सुस्ती करनेवालों का अंजाम बुरा है :** सूर–ए–माउन आयत नंबर : ४ ता ६ में अल्लाह तआला नमाज़ से ग़फ़लत व सुस्ती बरतने वाले को तंबीह करते हुए फ़रमाते हैं: बड़ी ख़राबी है ऐसे नमाज़ पढ़ने वालों के लिये, जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत व सुस्ती बरतते हैं, जो दिखावा करते हैं ।